चन्दामामा
माँ-बच्चों का मासिक पत्र

Photo by Ravinder Kumar Paul

पुरस्कृत परिचयोक्ति

विजय के बाद !

प्रेषक : जगतारसिंह दुग्गल, देहरादून

मनोहर गन्धवाली!
Remy
Remy
रेमी
सौन्दर्य सामग्री

पतिसेवा की कसौटी!

दिनभर की मेहनत और दौड़धूप के बाद आप के पति थक गये हैं—उनकी थकान उतारने के लिये उन्हें शाम की चाय के साथ कम से कम ८ पार्ले के कुरकुरे ग्लूको बिस्कुट जरूर दीजिये—वे आप की बेहद सराहेंगे।

हर पत्नी अपने पति की प्रसन्नता के लिये शाम की चाय के साथ उसे कुछ न कुछ स्वादिष्ट चीज खाने को देती है—और पार्ले के कुरकुरे ग्लूको बिस्कुट ऐसे वक्त के लिये आदर्श होते हैं। वे आप के पति को प्रसन्न रखेंगे तथा उन्हें ताजगी प्रदान करेंगे.

याद रखिये: पार्ले के कम से कम ८ कुरकुरे और पौष्टिक ग्लूको बिस्कुट उन्हें शाम के नाश्ते पर देना न भूलिये।

पार्ले के

ग्लूको

बिस्कुट

विटामिनों से भरपूर

पार्ले प्रॉडक्ट्स मॅन्युफॅक्चरिंग कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई-२.

मुन्नी रोई तो भला क्यों ?

मुन्नी ने जब रोना शुरू किया तो पहिले फुस फुस करने लगी। फिर सुबकियाँ भरीं और देखते ही देखते आसमान सर पर उठा लिया। मुन्नी की सहेली नीनू चुपके चुपके मुन्नी को मना रही थी। अपनी तोतली भाषा में कह रही थी, "ना रो मुन्नी, जब मेरे पेना जी ओफिस से आयेंगे तो उनको मैं बोलूंगी ..." लेकिन नीनू की सुनता कौन है। मुन्नी की नई गोल मटोल गुड़िया के भरे भरे गुलाबी गालों पर मैल का बड़ा सा तिल लगा था, गुड़िया की नई फ्राक पर मैली उंगलियों के निशान पड़े थे ... और मैं खिड़की की ओट में खड़ी यह तमाशा देख रही थी। जब मुन्नी नहीं मानी तो मैं अंदर आई। मुझे देख कर तो जैसे गवैया वाह वा पाने पर ऊंची ऊंची तानों में गाने लगता है, मुन्नी उसी तरह से रोने लगी। बेचारी नीनू, हमारे पड़ोसियों की लड़की, ठुनक कर सहमी सहमी सी एक कोने में खड़ी हो गई। अभी मैं सोच ही रही थी कि मुन्नी को मनाऊं तो नीनू और घबराएगी और जो नीनू को दिलासा दूं तो मुन्नी अपनी चीखों से कानों के पर्दे फाड़ देगी, तभी नीनू की माँ, सुशीला दौड़ी आई। मुन्नी को लपक कर गोदी में उठाया और लाड़ से कहने लगी, "हमारी बिटिया को कौन मारता है।"

और बिटिया रानी सिसकियाँ ले ले कर बोली, "चाची, चाची, नीनू—नीनू ने गुड़िया की फ्राक मैली कर दी!"

"ओ, हो, हो! हम नीनू को मारेंगे। अपनी प्यारी मुन्नी को नई फ्राक लाके देंगे।"

"चाची, चाची, मेरे लिये नहीं, गुड़िया के लिये।"

मुन्नी, नीनू और गुड़िया को सुशीला अपने साथ ले गई और मैं घर के काम काज में लग गई। शाम के चार बजे होंगे जब मुन्नी गुड़िया

को ले कर नाचती हुई घर आई। नई फ्राक देख कर मैं ने सुशीला को आंगन से आवाज़ दी और चाय मेरे घर पीने को कहा। सुशीला आई तो मैं ने शिकायत की: "भला नई फ्राक लाने की क्या ज़रूरत थी?"

"यह नई नहीं बहिन! वही तो है। ज़रा धो डाली और इस्री कर दी, बस!"

"ज़रा धो डाली! ना बहिन, यह तो बहुत ही साफ़ और उजली धुली है! क्या चमक रही है!"

सुशीला चाय का एक घूंट पी कर बोली: "यह तो इस लिये कि इसे सनलाइट से धोया है। घर के कुछ कपड़े थे, मैं ने कहा चलो मुन्नी की गुड़िया की फ्राक भी धो डालूं।"

मैं ने मन में कहा अब बात की जड़ तक उतर के रहूंगी: "तो कितने कपड़े धो डाले तुम ने? अब हमें बनाओ मत! कपड़े पीटने पटखने की आवाज़ तक तो आई नहीं!"

सुशीला बोली: "अब चाय पी लें तो घर चल कर तुम्हें एक चीज़ दिखाऊंगी।"

सुशीला मज़े से चाय पीती रही, मुसकराती रही, मुझे देखती रही। मैंने तो ऐसे तैसे कर के चाय पी डाली।

उस के घर जा कर देखा तो इस्री किये हुए कपड़ों का ढेर पड़ा था। उन्हें गिनने के लिए मैं हाथ लगाते डरती थी कि कहीं मैले न हो जाएं। सुशीला से बातों बातों में मालूम हुआ कि ये सभी कपड़े उस ने सनलाइट से धोए हैं। इन में चादरें, तौलिए, पर्दे, पाजामे, कमीज़ें, धोतियां, फ्राकें, वग़ैरह वग़ैरह, कोई एक चीज़ तो नहीं थी। मैं हैरान हो गई कि इतने सारे कपड़े धोए हैं तो समय भी कितना लगा होगा और साबुन भी कितना ख़र्च हुआ होगा। उस ने मुझे समझाया कि, "यह सभी कपड़े आसानी से, आराम से, कम ख़र्च में साफ़ और उजले धुले हैं। एक ही टिकिया से ४०/५० छोटे बड़े कपड़े धोना कोई बड़ी बात नहीं।"

अब उस दिन मैं ने फ़ैसला किया कि मैं भी अपने कपड़े सनलाइट से धो कर देखूंगी। और सचमुच सुशीला की एक एक एक बात सच निकली। सनलाइट साबुन थोड़ा सा मलने पर भरपूर झाग देता है और वह भी ऐसा कि जो कपड़े के ताने बाने में जा कर सारा मैल बाहर खींच लाए — न पीटने की ज़रूरत, न पटखने की — और कपड़े साफ़ और उजले धुल जाएं।

हां, एक बात और! सनलाइट की सुगंध भी ऐसी है कि कपड़ों में से स्वच्छता की महक आती है और इस का झाग हाथों को कोमल और मुलायम रखता है। अब जिसे इतना कुछ मिले उसे और क्या चाहिए!

मोहक सौंदर्य के लिये

नेशनल का

काश्मीर स्नो

चित्र तारिकाओं
का प्रिय

दी नेशनल ट्रेडिंग कंपनी, बम्बई - २ ★ मद्रास - १

गुण में अतुल्य, पर दाम में कम

FOR Costly PENS

Iris

INKS

"आइरिस
इन्क्स"

हर फ़ाउन्टेन पेन के लिए उम्दा,

१, २, ४, १२, २४ औन्स के बोतलों में मिलता है।

निर्माता :

रिसर्च केमिकल लेबोरटरीज

मद्रास-४ ★ नई दिल्ली-१ ★ बेंगलोर-३

बच्चों के खेल के लिए ...

....सही स्थान खेल का मैदान है। समझदार माता-पिता अपने बच्चों में खेल के मैदान का उपयोग करने की अच्छी आदत डालते हैं, न कि सड़कों पर खेलने की।

बच्चों के विकास के लिए दूसरी अच्छी आदत है खाने की।

स्वास्थ्यपूर्ण ढंग से धूप में पके गेहूं, माल्ट, ग्लूकोज, दूध आदि से तैयार

जे. बी. मंघाराम एण्ड कम्पनी
ग्वालियर

चन्दामामा

संचालक : चक्रपाणी

हम कुछ महीनों से "चन्दामामा" में शेक्सपीयर के प्रसिद्ध नाटकों को कथा-रूप में दे रहे हैं। हमारा यह लक्ष्य है कि भारतीय बच्चे संसार के महान कलाकारों की कृतियों से परिचित हों। इससे उनकी ज्ञान परिधि तो बढ़ेगी ही और बाल साहित्य में वह अमर साहित्य भी आ सकेगा, जो अब तक उनकी पहुँच के बाहर समझा जाता था।

अच्छा होता यदि हम इन कथाओं को भारतीय पृष्टभूमि दे पाते। पर ऐसा करने से हमारा यह सन्देह रहा कि अमर साहित्य के रूप को क्षति पहुँचेगी।

आशा है कि पाठक इन कथाओं को पसन्द करेंगे।

वर्ष : १०   मई १९५९   अंक : ९

महाभारत

जब कृष्ण का भाई, बलराम, यह कहकर कि वह युद्ध में किसी की तरफ़ से न लड़ेगा, यात्रा पर चला गया था, तब रुक्मिणि का भाई रुक्मि एक अक्षौहिणी सेना लेकर पाण्डवों के पास आया। युधिष्ठिर ने यह सोचकर कि कृष्ण प्रसन्न होगा उसका खूब आदर-सत्कार किया।

फिर रुक्मी ने, जब सब सुन रहे थे अर्जुन से कहा—“मैं युद्ध में तुम्हारी मदद करूँगा। डरो मत। वैसे तो इन राजाओं की भी कोई जरूरत नहीं है। मैं अकेले ही युद्ध में, कृष्ण, द्रोण, कर्ण, भीष्म आदि, सब को मार दूँगा।” उसने शेखियाँ मारी।

अर्जुन ने हँसकर कहा—“मैंने पहिले अकेले ही कौरवों को जीता था। खाण्डव दहन के समय, देवता और राजाओं को भी हराया था। इसलिये मुझे भय नहीं है। अब भी, ऐसी बात नहीं है कि मेरा गुजारा न होगा, यदि मेरी कोई सहायता न करे। आप चाहें, तो कहीं और भी जा सकते हैं। अगर आप हमारे साथ ही रहना चाहें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।”

फिर रुक्मी दुर्योधन के पास गया। उससे भी वही कहा, जो अर्जुन से कहा था। दुर्योधन ने उसकी सहायता लेने से इनकार कर दिया और उसको भेज दिया। बलराम की तरह, रुक्मी ने भी युद्ध में भाग न लिया। शेष राजा किसी न किसी तरफ़ से लड़े।

उधर हस्तिनापुर में अंधे राजा धृतराष्ट्र ने संजय को बुलाकर युद्ध की खबरें

मुख - चित्र

पूछीं—"संजय, मैं यह जानते हुये भी कि यह युद्ध गलत है, दुर्योधन का मन न बदल सका। न मालूम यह क्या विचित्र बात है, जब वह मेरे पास आता है, तो उसकी सारी बातें ठीक मालूम होती हैं। खैर, जो होना होगा, सो होगा ही। युद्ध में मर मिटना तो क्षत्रियों का धर्म है ही।" यह कहकर धृतराष्ट्र चिन्तित हो गया।

तब संजय ने कहा—"जो गलती आपकी है, उसे दुर्योधन पर क्यों थोपते हैं! यदि आपको विधि में विश्वास है, अनर्थ हो जाने पर भी आपको चिन्तित नहीं होना चाहिये।" उसने उनको यों आश्वासन दिया।

इस बीच, दुर्योधन ने, कर्ण, शकुनि, दुश्शासन आदि से विचार करके शकुनि के लड़के उलूक को बुलाकर कहा—"तुम हिरण्वती नदी के किनारे, पाण्डवों के शिविर में जाओ। एक-एक से मेरी तरफ से इस पकार कहो।" दुर्योधन ने उसको सविस्तार बताया कि युधिष्ठिर, कृष्ण, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव और राजाओं से क्या क्या कहना था। ये बातें अहंकारपूर्ण थीं। सुननेवालों को क्रुद्ध करने के लिये कही गई थीं।

उलूक पाण्डव शिविर में दूत होकर गया। उसने युधिष्ठिर से कहा—"मैं वे सब बातें कह रहा हूँ, जो उन्होंने मुझे आप सब से कहने के लिये कहा है। क्योंकि वे मेरी बातें नहीं हैं, इसलिये आप कृपा करके मुझ पर न बिगड़िये।" कहकर उसने एक एक से दुर्योधन के कहे हुये निन्दा भरे वाक्य कहे।

ये बातें सुनकर, केवल पाण्डव और अन्य राजाओं को ही नहीं अपितु कृष्ण

को भी बड़ा गुस्सा आया। कई की गुस्से से आँखें लाल हो गईं। कई दान्त पीसने लगे। सब को कौरव सेना पर बुरी तरह गुस्सा आया।

भीम ने उलूक को गालियाँ दीं। परन्तु अर्जुन ने भीम को रोकते हुये कहा—"दुर्योधन से कहना कि उनकी इच्छा पूरी हो गई है। कल सवेरे युद्ध के लिये तैयार रहने को कहो।" उसके बाद, पाण्डवों ने और अन्य राजाओं ने, दुर्योधन को जो कुछ कहना था, उलूक से कहा। क्रोध के कारण वे काँप-से रहे थे।

अर्जुन ने दुर्योधन से यह कहने के लिए कहा—"अपने पराक्रम पर भरोसा करके दूसरों की सहायता पानेवाले हम मर्द हैं। तुम दूसरों के पराक्रम पर आधार होकर युद्ध में उतर रहे हो, इसलिये नराधम हो। यही कारण है कि तुम पुरुषोत्तम भीष्म को बलि देने के लिये, कौरव कुल का नाश करने के लिये इस युद्ध के लिये उतावले हो रहे हो।"

सबकी बातें सुनकर उलूक के चले जाने के बाद, युधिष्ठिर, अपने सेनाधिपति, धृष्टद्युम्न को लेकर, सेना को युद्ध क्षेत्र में

ले गया। धृष्टद्युम्न ने यह निर्णय किया कि कौन कौन उसकी सेना में से कौरवों के किन किन योद्धाओं से लड़ेगा। कर्ण का अर्जुन, दुर्योधन का भीम, शल्य का धृष्टकेतु कृपा को उत्तमौज, अश्वत्थामा का नकुल कृतवर्मा का शैल्य, सैन्धव का युयुधान, भीष्म का शिखण्डी, शकुनि का सहदेव, वृषसेन का अभिमन्यु मुकाबला करेंगे, यह निश्चय किया गया। तब धृष्टद्युम्न ने कहा—"मैं स्वयं द्रोण का मुकाबला करूँगा।" फिर उसने अपने योद्धाओं के व्यूह बनाये। वह तब युद्ध के प्रारम्भ की प्रतीक्षा करने लगा।

उधर कौरव शिविर में, दुर्योधन ने अपने सेनाधिपति भीष्म से कहा—"कृपया बताइये हमारी सेना और पाण्डवों में कौन कौन अतिरथ हैं, कौन कौन महारथ हैं, कौन कौन एक रथ, और कौन कौन अर्धरथ हैं।"

भीष्म ने तब समझाकर बताया कि दोनों सेनाओं में कौन किस श्रेणी का था, और कौन इस युद्ध में, कितनी कुशलता व अनुभव से लड़ेगा।

भीष्म ने कहा कि वह पाण्डवों को स्वयं न मारेगा। उसी तरह द्रोण को

अश्वत्थामा भी अतिरथ होता, यदि अच्छा योद्धा होने पर भी, उसे मृत्यु का भय न होता। इस कारण वह महारथ मात्र ही है। उनकी राय में कर्ण का लड़का, वृषसेन, अलम्बुस राक्षस महारथ थे। शकुनि एक रथ था। और पाण्डवों में अतिरथ हैं पाँचो पाण्डव, अभिमन्यु, धृष्टद्युम्न उसका भाई सत्यजित उत्तमोज, घटोत्कच, और महारथ हैं, द्रौपदी के पाँच पुत्र, उप पाण्डव, विराट, द्रुपद, शिशुपाल का लड़का धृष्टकेतु।

परन्तु भीष्म ने कर्ण के बारे में बताते हुये कहा—"मेरी राय में कर्ण केवल अर्धरथ है। क्योंकि वह अपने कवच कुण्डलों को खो बैठा है। यही नहीं इस पर परशुराम और ब्राह्मणों का शाप है। वह अर्जुन का मुकाबला करते जीवित न रह सकेगा।"

इन बातों का द्रोण ने समर्थन करते हुये कहा—"भीष्म! इन बातों में कुछ भी असत्य नहीं हैं। मैंने प्रति युद्ध में देखा है कि युद्ध के प्रारम्भ में कर्ण खूब उत्साह दिखाता है, फिर होते होते उसका उत्साह ठंडा होता

अर्जुन पर बहुत प्रेम है, वे अपने लड़के अश्वत्थामा से भी उसको अधिक चाहते हैं। वे हमेशा अर्जुन के शौर्य पराक्रम की प्रशंसा करते रहते हैं। वे अर्जुन को न मारेंगे। शल्य, पाण्डवों के बन्धु हैं, पर वे अपने भान्जे, नकुल और सहदेव को छोड़कर किसी और को मारने में आगा-पीछा न करेंगे।

भीष्म ने कौरवों की तरफ, दुर्योधन उसके निन्यानवें भाई, कृतवर्मा, शल्य पुरिश्रव, सैन्धव, कृपा, द्रोण, बाह्लिक को अतिरथों में गिनाया। भीष्म ने बताया कि

जाता है। और ये एक अतिरथ के लक्षण नहीं हैं।"

यह सुन कर्ण को बहुत गुस्सा आया। उसने अपना गुस्सा भीष्म पर उगला—"ओ, बूढ़े, मौका मिलने पर, मेरे बारे में अन्टसन्ट बकवास करता है। दुर्योधन को देखकर मैं यह बकवास सहता आया हूँ। लगता है कि तुम में बिल्कुल बुद्धि नहीं है। मुझ से पूछा जाय तो मैं तुझे ही अर्धरथ कहूँगा। यह मुझे ही नहीं, सबको मालूम है। दुर्योधन यह नहीं जान पा रहा है कि तुम कौरवों को धोखा दे रहे हो। अगर तुम शत्रुओं के आदमी न होते, तो अपनी तरफ से लड़नेवाले योद्धाओं के बारे में ऐसी बातें न करते।

बाल पक जाने मात्र से क्या किसी में इतनी अक्ल आ जाती है कि यूँ ही बताये कि कौन अतिरथ है, कौन महारथ है—जैसे सूझा, वैसे रथ, अतिरथों का विभाजन करके, तुम उन में मनमुटाव करना चाहते हो। द्वेष बढ़ाना चाहते हो।"

फिर कर्णने दुर्योधन से कहा—"राजा, यह भीष्म तुम्हें कहाँ मिला है! इस जैसा जिस सेना में मनमुटाव करता हो,

यह सेना किस काम की रहेगी!" इस बूढ़े को तुमने सेनापति बनाया है। बाकी, अपने बल पराक्रम के बल पर विजय पाकर सेनापति बनते हैं। इस कारण से जब तक यह भीष्म जीवित है, तब तक मैं युद्ध न करूँगा। इसके बाद शत्रुओं को मैं अकेला जीतूंगा।"

भीष्म ने गुस्से में कहा—"अरे, नीच, युद्ध शुरू होनेवाला है, इसलिये तुम्हें छोड़े देता हूँ। तुम जैसे, मैं अपनी प्रशंसा आप नहीं कर सकता। मैं ही अकेला हूँ, जो परशुराम के अस्त्रों के सामने अचल खड़ा रहा। मैं ही काशी राजा की लड़कियों को लाते समय, सब राजाओं से अकेला लड़ा था। उनको जीता था। तुझे मारना कोई बड़ी बात नहीं है। सचमुच तेरे कारण ही कौरवों की यह दुस्थिति हुई है। अगर कर सको, तो उनकी यह हालत सुधारो।"

दुर्योधन ने मीठी-मीठी बातें करके भीष्म का गुस्सा ठँडा किया। "बाबा, शिखंडी भी औरों की तरह, शस्त्र लेकर हमसे लड़ रहा है, आप क्यों उसे न मारने के लिए कह रहे हैं! क्या इसका कोई विशेष कारण है?

"दुर्योधन! मेरा नियम है कि मैं स्त्रियों से, व ऐसे लोगों से जो कन्या के रूप में पैदा हुए हों, फिर पुरुष हो गये हों, नहीं लड़ता। शिखण्डी कुछ दिनों तक कन्या था। फिर वह पुरुष हो गया। यही नहीं यदि तुम इस शिखण्डी का पूर्व जन्म वृन्तान्त सुनो तो तुम्हें मालूम हो जायेगा कि मैं उससे क्यों नहीं लड़ रहा हूँ।" कहकर भीष्म ने, दुर्योधन और उपस्थित राजाओं को शिखण्डी के पूर्व जन्म की कहानी सुनाई।

[१०]

गरम पानी की नदी के पार जाने वाले महासर्प की पीठ पर से भाग कर चन्द्रवर्मा फलों के बाग में पहुँचा। अन्धेरा होने के बाद जब वह पेड़ की टहनियों पर सो रहा था तब वह भैरण्ड पक्षियों द्वारा पैदा किये गए झोंका से, वहाँ से फिसला और एक भैरण्ड पक्षी के ऊपर जा गिरा। रात के समय अग्नि पक्षी वहाँ आया। उसने उन पक्षियों से प्रार्थना की कि वे कपालिनी को शंख के पास लायें। वे यह करने केलिए मान गए। बाद में:—

अग्नि-पक्षी ने, जो सम्भाषण, भैरण्ड पक्षियों से किया था, उसे सुनकर चन्द्रवर्मा को बहुत आनन्द हुआ। काल सर्प की सहायता से उसे उस आश्चर्यजनक वृक्ष से फल खाने का मौका मिला था। और उस फल के खाने के कारण ही आज वह पक्षियों की भाषा भलीभाँति समझ सका था। शंख के पास, हर तरह की मुसीबतें झेलते, सौ योजन पैदल जाने की अपेक्षा यही आसान था—कि इन भैरण्ड पक्षियों के पंखों में बैठकर वहाँ पहुँचे। इस तरह रास्ता आराम से कटता और समय बचता।

वह अपने इस सौभाग्य पर फूला न समाता था। वह इस चिन्ता में था कि कब प्रातःकाल होता है और कब वह भैरण्ड पक्षियों के साथ सौ योजन दूर

पहुँचता है। उसने सोचा कि शंख जो चालें, कपालिनी को पकड़ने के लिये चल रहा था, वे निष्फल होंगी। कपालिनी उतनी नादान न थी। वह सब जानती बूझती थी। शायद वह उन भेरण्ड पक्षियों को पकड़वाकर—काल सर्प को खिलवा दे।

चन्द्रवर्मा अभी इसी उधेड़ बुन में था कि सवेरा हो गया। सूर्य की किरणों के मुख पर पड़ते ही भेरण्ड पक्षियों ने आँखें खोलीं, और पंख तेज़ी से फड़फड़ाकर अकाश में वे उड़ चले।

चन्द्रवर्मा उनके पंखों में छुपा हुआ था। उसे यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि वे उत्तर दिशा की ओर जा रहे थे। देखते देखते वे कई पहाड़, नदी जंगल पार करते, एक पर्वत के पास पहुँचे, उनकी बातचीत से चन्द्रवर्मा को मालूम हुआ कि वह पर्वत, शंख का पर्वत ही था—उसका गम्यस्थान।

जिस पक्षी पर चन्द्रवर्मा बैठा था, उसने यकायक नीचे देखकर दूसरे पक्षी से कहा—"मित्र! झील देख रहे हो न! देखो, वह मगर....हाथी के बराबर मगर। मगर

का माँस खाये बहुत दिन हो गये हैं।"
तुरत वह पंख फड़फड़ाता तेज़ी से नीचे गया—बाण की तरह और झील की ओर कूदा।

इस प्रकार यकायक नीचे कूदने से चन्द्रवर्मा घबरा गया और वह पंख, जिसको उसने पकड़ रखा था, उसके हाथ से छूट गया। तुरत वह पक्षी के ऊपर से गिर गया। औंधे मुँह हवा में तैरता-सा झील में गिरने लगा। वह बहुत भयभीत था। काँप रहा था।

भैरण्ड पक्षी न जानता था कि चन्द्रवर्मा उसकी पीठ से गिरकर झील में गिर रहा था। उसकी नज़र पानी की सतह पर तैरते हुए मगर पर थी। चन्द्रवर्मा की नज़र भी उसी ओर गई। वह यह जानकर घबराने लगा कि या तो भैरण्ड पक्षी उसे अवश्य निगल जायेगा नहीं तो झीलवाला भयंकर मगर।

इतने में झील से पानी, ताड़ के पेड़ के समान ऊँचा उठा। चन्द्रवर्मा पानी में गिरनेवाला था कि उसने सिर एक तरफ़ मोड़कर देखा। भैरण्ड पक्षी ज़ोर से

चिल्लाता उड़ा जा रहा था। उसके पैरों में हाथी के बराबर मगर एक कीड़े की तरह छटपटा रहा था।

चन्द्रवर्मा यह दृश्य पलक भर ही देख सका। फिर वह झील में डूब गया। थोड़ी देर बाद जब वह ऊपर उठा तो उसने देखा कि छोटे मोटे मगर अन्धाधुन्ध इधर उधर भाग रहे थे। बड़ी लहरें उठ रही थीं।

चन्द्रवर्मा ने सोचा, शायद यह सब मेरे भले के लिए ही हुआ है। भेरुण्ड पक्षियों को देखने के कारण मगर वहाँ से भागे जा रहे थे। यह नहीं होता तो वे चन्द्रवर्मा का हाथ या पैर पकड़ लेते, उसके टुकड़े टुकड़े करके निगल गये होते।

चन्द्रवर्मा जान बचाकर धैर्य से झील के किनारे की ओर जल्दी जल्दी तैरने लगा। झील के किनारे घने पेड़ थे। अगर वह उन पेड़ों में पहुँच गया तो उसका अन्दाज़ था कि वह मान्त्रिक शंख के नौकरों से भी बचकर सुरक्षित कहीं जा सकेगा।

अभी किनारा बीस तीस गज़ दूर था कि उसे पानी कुछ हिलता दिखाई दिया। तुरत कुछ आगे, एक मगर अपनी पूँछ से पानी को इधर उधर मारता उसकी तरफ़ तेजी से आने लगा।

चन्द्रवर्मा को एक क्षण काठ-सा मार गया। उसका शरीर कमरा-सा गया और डूबने-सा लगा। वह भय से चिल्लाया। फिर न जाने उसमें कहाँ से शक्ति आ गई। वह जैसे तैसे तैरता, तट पर जल्दी जा लगा।

वह मगर जो उसे पापड़ की तरह खा जाता, उसके थोड़ी देर बाद किनारे पर लगा। परन्तु इस बीच चन्द्रवर्मा पानी

छोड़कर, पेड़ों की ओर भागा। मगर दान्त निकालकर कुछ देर तक उसकी ओर देखता रहा, फिर निराश तैरता....झील के बीच में चला गया।

चन्द्रवर्मा थकान के कारण हाँफ रहा था। पेड़ के तने से सटकर, बैठकर वह आराम करने लगा। फिर उसे अपनी तलवार की याद आई। उसे डर लगा कि जब भैरण्ड पक्षी के ऊपर से गिरा था, तब वह उसे खो बैठा था। म्यान में से तलवार कुछ बाहर आगई थी। चन्द्रवर्मा ने तलवार बाहर खींची, म्यान में जो पानी भर गया था, उसे भी निकाला। फिर आराम से तलवार को पोंछकर म्यान में रख दिया।

"अभी तक तो भाग्य ने मेरा साथ दिया है। सौ योजन का फासला, बिना थकान के ही खतम हो गया। झील में गिरा और मगरों का भोजन हुए बगैर बचकर बाहर आ गया। आत्म रक्षण के लिए जो मेरे पास एक हथियार था, उसे भी न खोया। अब मुझे क्या करना है! सोचता सोचता चन्द्रवर्मा उठा। खड़ा हुआ। धीमे धीमे थोड़ी दूर जाकर झाड़ियों को एक तरफ हटाकर, उसने सामने की ओर देखा।

सामने, बहुत समीप एक ऊँचा पहाड़ था। उस पहाड़ की चोटी बहुत पैनी थी। ज्यों ज्यों नीचे आती जाती थी, वह मोटी होती जाती थी। समतल प्रदेश पर आते आते वह बहुत चौड़ी हो गई थी। दूर से देखने पर लगता था जैसे किसीने लट्टू को उलटकर रख दिया हो। पेड़-पत्ते थे, सुन्दर स्थल था।

"यह वही पर्वत है जिस पर मान्त्रिक शंख रहता है। मैं अब उसके पास पहुँच

गया हूँ। मुझे चाहिए उसका अपूर्व शक्तिवाला शंख, जो उसने अपने पूजागृह में रख रखा है। वह शंख नाग के गले से लटक रहा होगा। मुझे उस शंख को चुराकर, कपालिनी को देना है। वाह, अब तक सब ठीक हुआ है, पर अब इस शंख को कैसे लिया जाय! कैसे जाकर कपालिनी को दिया जाय?"

चन्द्रवर्मा ने इस प्रकार सोचते हुए निश्वास छोड़ा। जब कपालिनी को वचन देकर, वह शंख के पर्वत के लिए निकला था, तब उसके सामने एक ही समस्या थी....वह यह कि सौ योजन चलकर कैसे उस पहाड़ पर पहुँचा जाय! और अब उस पहाड़ तक पहुँचने के बाद, उसे यह समस्या सताने लगी थी कि कैसे उस शंख को लिया जाय!

चन्द्रवर्मा इस समस्या को किस तरह सुलझाया जाय, यह सोच ही रहा था कि उसको इतनी भयंकर आवाज़ सुनाई दी कि कान फूटते-से लगते थे। चन्द्रवर्मा चौंका। इतने में वह भयंकर आवाज़ फिर सुनाई दी। इस बार चन्द्रवर्मा जान गया कि वह आवाज़ किसकी थी। वह आवाज़ पास के पेड़ों से आ रही थी। वह अग्निपक्षी की आवाज़ थी। पिछली रात को, जब वह भैरण्ड पक्षियों से बातचीत करके उड़ा था, तब भी उसने ऐसी आवाज़ की थी—यह आसानी से जाना जा सकता था।

चन्द्रवर्मा जान गया कि वह शंख के निवासस्थल के समीप था। अब उसको उसके सेवकों से अथवा उससे ही हानि होने की सम्भावना थी। फिर उसे याद आया कि अग्नि पक्षी को दिन में न दिखाई देता था। इसलिए उसको उससे

खतरा न था। परन्तु शंख के और सेवकों के बारे में!

चन्द्रवर्मा कुछ देर तक इन बातों के बारे में सन्देह करता डरता रहा। फिर उसने हिम्मत बटोरकर सोचा कि आनेवाले खतरे के बारे में अभी सोचकर व्याकुल होना व्यर्थ है। फिर जाने कहाँ से उसके मन में विचित्र साहस और शरीर में शक्ति आ गई।

चन्द्रवर्मा ने पेड़ों पर से खोज-खोज कर फल खाये। झील की ओर बहनेवाले नाले में ठंडा पानी पिया। फिर वह एक घने पेड़ पर चढ़ गया। और उसकी टहनियों पर लेट गया। वह इसकी प्रतीक्षा करने लगा कि कब अन्धेरा होता है। उसका ख्याल था कि अन्धेरा होने के बाद, ही शंख के पर्वत पर चढ़ना अच्छा था। पकड़े जाने की कम आशंका थी।

थकान के कारण चन्द्रवर्मा थोड़ी देर में ही, उन टहनियों पर सो गया। अजीब अजीब सपने देखने लगा।

सूर्य जब ऐन सिर पर आया, तब भी पत्तों के कारण उसपर धूप न पड़ी। इस कारण, सूर्यास्त के बाद भी, जब अन्धेरा

हो गया, तब भी वह वहाँ पड़ा पड़ा मस्त सो रहा था।

अकस्मात् रात के समय, चन्द्रवर्मा ने आँखें खोलीं। चारों तरफ़ घना अन्धकार था। पास की झील में से धीमी-धीमी कोई आवाज़ आ रही थी। हवा के कारण पेड़ों की टहनियाँ टकरातीं और अजीब आवाज़ करतीं।

"लगता है, काफ़ी देर हो गई है। यही अच्छा मौका है। पहाड़ पर चढ़कर पता लगाया जाय कि शंख के पूजा गृह में क्या है!" यह सोच चन्द्रवर्मा पेड़ पर से उतरा। अंगड़ाई ली। एक बार अपनी तलवार देखी। फिर चौकन्ना हो वह चल दिया।

चन्द्रवर्मा अन्धेरे में, छोटी-छोटी झाड़ियों से बचता, पहाड़ की ओर थोड़ी दूर गया। उसकी आँखें, उस घने अन्धकार में अग्नि पक्षी को खोज रही थीं। उसे न मालूम क्यों सन्देह हो रहा था कि पहिली आपत्ति उसपर उसी के कारण आनेवाली थी। अगर वह पक्षी उस समय वहाँ न हो तो वह आसानी से, सुरक्षित, शंख के पूजा गृह तक पहुँच सकता था। यह उसका विश्वास था।

चन्द्रवर्मा पहाड़ के पास आ रहा था कि उसे पास से, किसी का कराहना सुनाई दिया। फिर उसे किसी ने "वर्मा" कहकर पुकारा।

चन्द्रवर्मा तुरत जान गया कि वह आवाज़ किसकी थी। वह "कपालिनी" कहता, उस ओर तेज़ी से चला, जिस ओर से वह आवाज़ आई थी।

(अभी है)

अचिन्तित आतिथ्य

सब छोटी-सी बात पर...

मेस्सिनो का राजा लियोनाटो था। उसके एक लड़की थी जिसका नाम हीरो था। बियाट्रिस नाम की लड़की, लियेनाटो के भाई की लड़की थी। हीरो और बियाट्रिस बहुत मिल-जुल कर रहा करती थीं। पर दोनों के विचारों में बहुत भेद था। हीरो हमेशा गम्भीर रहती। बियाट्रिस हमेशा हँस मुख।

एक दिन लियोनाटो के घर कुछ अतिथि आये। वे एक युद्ध में हिस्सा लेकर, अपने देश वापिस आ रहे थे। उनमें एक अरागान देश का राजा था। उसका नाम डानपीड्रो था। दूसरा उसका मित्र क्लाडियो था, जो फ्लॉरेन्स का राजा था। उनके साथ पदूवा का राजकुमार बेनिडिक भी था। वह बहुत बातूनी और मजाकिया था। ये तीनों लियोनाटो के परिचित थे। उसने इन अतिथियों का परिचय, हीरो और बियाट्रिस से कराया।

बेनिडिक लियोनाटो से गप्पें लगाने लगा। यह देख कि बातों में वह उसकी होड़ कर रहा था बियाट्रिस को गुस्सा आया उसने कहा—"बेनिडिक महाशय, आप चाहे कोई सुने भी न, तो भी बातें बन्द करते नहीं लगते।"

यह सुनते ही बेनिडिक को गुस्सा आया। उसे याद आया कि जब पिछली बार वह आया था तब भी बात बात पर बियाट्रिस ने उसको इसी तरह छेड़ा था। "उसने पूछा—देवीजी, तो क्या आप अब भी जीवित हैं!"

फिर क्या था! दोनों में झगड़ा शुरू हो गया।

हीरो चुप बैठी थी। क्लाड़ियो उसका सौन्दर्य देखकर उस पर मुग्ध था। जब उसने उसे पहिली बार देखा था, तब वह बहुत छोटी थी। डानपीड्रो ने बियाट्रिस और बेनिडिक को लड़ता देख कहा—"तुम दोनों की जोड़ी अच्छी है। दोनों का विवाह कर दिया जाय तो अच्छा होगा।

इस पर लियोनाटो ने कहा—"विवाह के सात दिन बाद ही दोनों झगड़ झगड़कर दिमाग़ बिगाड़ लेंगे।"

फिर डानपीड्रो और क्लाडियो अपने कमरों में वापिस गये। वहाँ क्लाडियो ने बताया कि उसको हीरो पर प्रेम था। इस बात को डानपीड्रो ने लियोनाटो से कहा। लियोनाटो ने उनके विवाह पर आपत्ति न उठाई। क्लाड़ियो ने हीरो से मिलकर कहा कि वह उससे विवाह करना चाहता था। हीरो मान गई। उन दोनों का विवाह निश्चित हो गया। विवाह की तिथि भी कुछ दिनों बाद निश्चित कर दी गई।

क्लाडियो इस प्रतीक्षा में था कि विवाह का दिन कब आयेगा। उसके लिये समय मुश्किल से कट रहा था। ताकि उसका समय कटे इसलिये डानपीड्रो ने एक बात सोची। बेनिडिक और बियाट्रिस का विवाह करने के लिए उसे एक उपाय भी सूझा।—वह यह था कि बेनिडिक और बियाट्रिस का आपस में लड़ना छुड़वाकर एक दूसरे को प्रेम कराना। इस बात में सहायता देने के लिए लियोनाटो मान गया। हीरो भी मान गई। यह एक नाटक-सा था।

इस नाटक का पहिला अंक इसप्रकार प्रारम्भ हुआ।

बेनिडिक उद्यान में बैठा पढ़ रहा था। यह पता लगते ही, डानपीड्रो, लियोनाटो, क्लाडियो, बातें करते उसके पास आये।

की है, वह है, बेनिडिक से प्रेम करना।" डानपीड्रो ने कहा।

वे कुछ और बातें करते सामने चले। उनकी बातचीत बेनिडिक ने सुनली। उनकी बात पर उसको विश्वास हो गया। उसने सोचा कि मैं बियाट्रिस से प्रेम करके रहूँगा। वह पछताया भी कि उसने उसे क्यों तंग किया था।

थोड़ी देर बाद बियाट्रिस ने आकर कहा—"मैंने कहा कि मैं न आऊँगी। फिर भी मुझे भेजा गया। कहा है कि भोजन के लिए आ सकते हैं।"

"अफ़सोस, तुम्हें इतना कष्ट दिया गया बियाट्रिस।" बेनिडिक ने कहा। बियाट्रिस ने उसके व्यवहार में परिवर्तन न देखकर वह पहिले की तरह ही उससे बातें करती रहीं। उसकी कड़वी बातें ही बेनिडिक को प्रेम भरी लगीं।

जो चाल डानपीड्रो ने बेनिडिक के लिए चली थी, वह हीरो ने बियाट्रिस के लिए भी चली। हीरो की सहेलियाँ थीं—उर्सुला, और मार्गरेट। उसने मार्गरेट से कहा—"बियाट्रिस अतिथियों से कुछ बातचीत करती मालूम होती है। तुम

"ख़ैर, क्या यह सच है कि बेनिडिक, बियाट्रिस के लिए तड़प रहा है!" उर्सुला ने पूछा।

"मुझे क्या मालूम! क्लाडियो और डानपीड्रो ने मुझे यह बात बताई है। और बियाट्रिस से कहने के लिये कहा है। मैंने कहा कि इससे बड़ी गल्ती कोई नहीं हो सकती। अगर यह बात बियाट्रिस को मालूम हो गई तो क्या वह बेनिडिक को और न तंग करेगी!" हीरो ने कहा।

फिर उन्होंने हीरो की विवाह की दिन की पोषाक के बारे में बातचीत की। उनको देखने के बहाने वे चली गईं।

जाकर उसके कान में कहो—"हीरो, बाग में, तुम्हारे बारे में उर्सुला से कुछ कह रही है। तुम चुपचाप जाओ, और छुपकर सुनो कि क्या कह रही है।"

यह चाल चल गई। बियाट्रिस बाग में गई। हीरो और उर्सुला को बातचीत करते देखा। वह पेड़ों के झुरमुट में से उनके पास गई। यह वही जगह थी, जहाँ पहिले बेनिडिक बैठा था।

थोड़ी देर बाद, हीरो और उर्सुला उस ओर बातचीत करती आईं। "उर्सुला, तुम नहीं जानती, बियाट्रिस को।........"

यह बातचीत सुनकर बियाट्रिस का दिल बिल्कुल बदल गया। जब वह फिर बेनिडिक से मिली, तो उससे बड़े प्रेम के साथ बातचीत की। उनकी शत्रुता पारस्परिक प्रेम में परिवर्तित हो गई। परन्तु हीरो और क्लाडियो का प्रेम बन्धन शिथिल होने लगा।

डानपीड्रो की सौतीली माँ का लड़का युद्ध से वापिस आता हुआ मेस्सिना आया। इसका दिल अच्छा न था। हमेशा दूसरों का बुरा करने की ही सोचता रहता।

उसकी अपने बड़े भाई डानपीड़ो से न पटती थी। उसके मित्र क्लाडियो को देखते ही उसे नफरत होती।—"क्लाडियो और हीरो की निर्विघ्न रूप से क्यों शादी हो.... क्यों न इसको तोड़ा जाय!—यह सोचकर उसने अपना एक अनुचर—बोटाखियो को इस काम पर भेजा।

बोटाखियो भी, सब तरह से डानजान की तरह ही था। वह, हीरो की सहेली, मार्गरेट से शादी करने की कोशिश करने लगा। उन दोनों में बात तय भी हो गई। बोटाखियो ने अपने प्रेयसी मार्गरेट से कहा—"आज रात को जब तुम्हारी मालकिन सो जाये तो तुम उनके कपड़े पहिन कर, उनके कमरे की खिड़की से झुककर, मुझ से थोड़ी देर बात करना।" मार्गरेट यह न जान सकी कि वह क्यों उससे वैसा करने के लिए कह रहा था। वह मान गई।

अगले दिन, हीरो और क्लाडियो का विवाह था। डानजान अपने भाई के कमरे में जाकर इस तरह बातें करने लगा—ताकि क्लाडियो सुन सके "यह हीरो तो बिगड़ी हुयी मालूम होती है। आज रात के समय अपनी खिड़की में खड़े होकर किसी से बात कर रही थी।"

"अगर आप चाहें तो आज रात मेरे साथ आइये। आप अपनी आँखों देख सकते हैं।" डानजान ने कहा।

उस दिन रात को, डानपीड़ो, क्लाडियो, डानजान ने, हीरो के कमरे की खिड़की में से मार्गरेट को चुप-चाप अपने प्रेमी से बातचीत करते देखा। क्योंकि मार्गरेट ने हीरो के कपड़े पहिन रखे थे, इसलिये सबने समझा कि वह हीरो ही थी। क्लाडियो का दिल टूट गया। उसे गुस्सा

आया। कल जिससे वह शादी करने जा रहा था उसका इतना साहस कि आज किसी से यों छुपे छुपे बात करे।

अगले दिन सब गिरजाघर में एकत्रित हुये। पुरोहित विवाह की विधि शुरु करने ही वाला था कि क्लाडियो हीरो को गालियाँ देने लगा। हीरो तो कुछ जानती न थी। उसने पूछा—"क्यों ऐसी बातें कर रहे हैं? क्या तबियत ठीक नहीं है?

लियोनाटो ने भी डानपीड्रो की ओर मुड़कर पूछा—"आप भी क्यों यह सब देखते खड़े है।"

"—यह अयोग्य है—यह मैंने मेरे भाई, और क्लाडियो ने अपनी आँखों स्वयं देखा है। क्या यह मेरे लिए अपमानजनक बात नहीं है कि क्लाडियो उस जैसी से विवाह करे।" डानपीड्रो ने कहा।

यह सुन हीरो को लकवा-सा मार गया। वह बेहोश हो गई। उसकी क्या हालत होगी। डानपीड्रो और क्लाडियो गिरजा घर से चले गये।

हीरो को होश में लाने के लिए बियाट्रिस ने कोशिश की, उसे हीरो पर पूरा भरोसा था। इसलिये उनके

दोषारोपण पर उसे बिल्कुल भी विश्वास न था। बेनिडिक, बियाट्रिस की मदद कर रहा था—"हीरो का क्या हाल है!"

"लगता है, मर गई है।" बियाट्रिस ने कहा।

यह सुन लियोनाटो को सन्तोष हुआ। क्योंकि, उसकी लड़की के बारे में डानपीड्रो ने जो कुछ कहा था, वह उसे सच समझ रहा था, उसे लगा कि जिस लड़की के कारण उसका इतना अपमान हुआ था उसका मरना ही अच्छा था।

"इसमें जरूर कुछ धोखा है। मेरी बात मानिये।" बूढ़े पुरोहित ने कहा। वह बहुत समझदार था। वह समझ सकता था कि जब हीरो यों गिर पड़ी थी तो उसके दिल को कितना दर्द हो रहा था। जो अपराध करते हैं, उनका दिल इतना नहीं दुखता।

थोड़ी देर बाद हीरो को होश आई। पुरोहित ने पूछा—"वे कह रहे हैं कि तुमने किसी से अकेले बात की है। वे कौन हैं बेटी!"

"मैं किसी को नहीं जानती। वह आदमी कौन है, वे ही जानते होंगे।"

"उसकी मृत्यु की खबर सुनकर क्लाडियो की निष्ठुरता जाती रहेगी। यही नहीं, यदि उसका प्रेम सच्चा होगा तो वह अवश्य पश्चात्ताप करेगा।" पुरोहित ने कहा।

बेनिडिक ने भी पुरोहित का समर्थन किया। उसने यह वचन भी दिया कि वह हीरो के रहस्य को किसी को न बतायेगा। लियोनाटो न सोच सका कि क्या किया जाये।—"जो तुम कहोगे वही मैं करूँगा।" आखिर उसने कहा।

लियोनाटो और हीरो को साथ लेकर, जब पुरोहित अपने घर गया तो बेनिडिक ने बियाट्रिस से कहा—"मेरी अन्तरात्मा कह रही है कि तुम्हारी बहिन के साथ अन्याय हुआ है।"

—"क्या मैं उस व्यक्ति की पूजा न करूँगी, जो इस अन्याय का प्रतीकार करेगा।" बियाट्रिस ने कहा।

"मैं तेरे लिये कुछ भी कर सकता हूँ। बता क्या करूँ?" बेनिडिक ने कहा।

"क्लाडियो को मार दो...." बियाट्रिस ने कहा।

"छी, छी, मर जाऊँगा, पर वह काम न करूँगा।" बेनिडिक ने कहा। परन्तु

उसने कहा। फिर उसने अपने पिता से कहा—"अगर मैंने कल किसी से बातचीत की हो तो मुझे बुरा भला कहो। पीटो, मरवा दो।" "डानपीड्रो और क्लाडियो को गलतफहमी हो गई है और कुछ नहीं है।" पुरोहित ने कहा।—"मैं आपकी लड़की को अपने घर रखूँगा। सब से यह कह दीजिये कि वह मर गई है। उसकी समाधि भी बनवाइये।"

"इससे क्या फायदा होगा?" लियोनाटो ने पूछा।

बियाट्रिस उसके पीछे ऐसी पड़ी कि उसको क्लाडियो से तलवार लेकर द्वन्द्व युद्ध करने के लिए मना लिया।

इस बीच, लियोनाटो, ने डानपीड्रो, क्लाडियो के पास जाकर कहा—"आपके कारण हमारी लड़की मर गई है। अगर तुम मर्द हो तो मुझ से युद्ध करो।" उस वृद्ध को देखकर उन दोनों ने कहा—"आप वृद्ध हैं। क्यों हमसे निष्कारण लड़ते हैं।" ठीक उसी समय बेनिडिक ने आकर, क्लाडियो को द्वन्द्व-युद्ध के लिए ललकारा।

"लगता है बियाट्रिस ने इसको इस काम के लिए प्रेरित किया है।" दोनों ने सोचा।

इतने में कुछ सैनिक बोटाखियो को बन्दी बनाकर वहाँ लाये। क्योंकि उसने किसी को बता दिया था कि डानजान के उकसाने पर उसने क्या दुष्ट कार्य किया था। नौकरों को सच मालूम हो गया।

बोटाखियो ने वह सब बताया, जो कुछ हुआ था। उसकी बातों के लिए किसी और गवाह की भी जरूरत न थी। क्योंकि ज्यों हि बोटाखियो पकड़ा गया

त्यों ही डानजान, बिना किसी को कहे, मेस्सिना छोड़कर चला गया।

क्लाडिया ने यह सब स्वयं सुना। उसके दुख की सीमा न थी। उसने लियोनाटो से माफी माँगी—"आप चाहे जो सजा दें, मैं उसे भुगतने के लिए तैयार हूँ।

"हमारी हीरो की एक ही बहिन है यह सम्पत्ति सब उसको मिलेगी। कल ही तुम उससे शादी करो।" लियोनाटो ने कहा। वचन तो पहिले ही दे रखा था, इसलिये बिना कुछ कहे, क्लाडियो इस के लिए मान गया।

अगले दिन सवेरे फिर सब चर्च में उपस्थित हुए। ताकि कोई पहिचाने न, इसलिए हीरो ने मुख ढक रखा था। विवाह के बाद उसने परदा हटाया। क्लाडियो को अपनी आँखों पर विश्वास न हुआ—"यह वही हीरो है न, जो मर गई थी!" उसने पूछा—

"जबतक बदनामी जीवित थी तभी तक वह मृत थी।" लियोनाटो ने कहा।

इतने में बेनिडिक ने वहाँ आकर पुरोहित से कहा कि उसका विवाह भी बियाट्रिस से कर दिया जाय। बीयट्रिस तुरत न मानी। उसने कुछ आपत्ति उठानी चाही।

—"क्यों बनती हो! मुझे पहिले ही हीरो ने बता दिया है कि तुम मुझ से प्रेम कर रही हो।" बेनिडिक ने कहा।

"तुमने ही पहिले मुझे प्रेम किया था।" बियाट्रिस ने कहा।

बातों बातों में, असली बात पता लग गई। यह जानकर भी कि वे दूसरों के नाटक के कारण एक दूसरे को चाहने लगे थे उन्होंने अपना दिल न बदला। उन दोनों का तभी विवाह हो गया। इस कार्य के लिए जो कष्ट तूफ़ान की तरह आये थे, काफ़ूर हो गये।

अपरीक्षित कारकम्

पाटलिपुत्र नगर में पहले
रहता था बनिया मणिभद्र,
धनी बहुत था पहले लेकिन
पीछे वह हो गया दरिद्र।

धन घटने से घटा मान भी
बढ़ा दुःख चिन्ता का भार,
सोचा करता रात-दिवस वह
दरिद्रता को है धिक्कार।

धन के बिना न सुख जीवन में
भली बुद्धि भी होती भ्रष्ट,
धन घटता है, साथ उसीके
बढ़ने लग जाते हैं कष्ट।

नमक तेल लकड़ी की चिंता
जिन्हें सताती है दिन-रात,
बुद्धिमान होने पर भी वे
करते हैं बहकी सी बात।

आखिर उसने सोच-सोचकर
लिया यही मन में निज ठान—
बोझ व्यर्थ का यह जीवन है
तज दूंगा अनशन कर प्राण।

लेकिन उसने उसी रात में
देखा सपना एक अनूप,
लक्ष्मी आयी दर्शन देने
जैन साधु का धरकर रूप।

बोली वह यह—"पुत्र, न हो यों
जीवन से तुम कभी निराश,
कल प्रातः मैं इसी वेश में
आऊँगी जब तेरे पास,

तब तू मेरे सिर पर करना
झटपट डंडे से आघात,
गिर जाएगा तत्क्षण ही फिर
सोने का होकर यह गात।"

"श्री भारतीभक्त"

और सबेरा होते सचमुच
एक साधु जब आया द्वार,
हर्षित होकर मणिभद्र ने
दिया माथ पर डंडा मार।

गिरा साधु डंडा लगते ही
स्वर्णमूर्ति बन गया तुरन्त,
मणिभद्र ने उसे उठाकर
घर के अन्दर रखा तुरन्त।

देखा उसके नाई ने भी
जिसने मन में किया विचार,
'मारो डंडा पाओ सोना,
का अद्भुत यह है व्यापार।

दिवस दूसरे कई साधुओं
को नाई ने दिया निमंत्रण,
जब वे उसके घर आये तो
शुरू किया डंडे से पूजन।

मरे चोट से कई साधु औ,
कई लगे करने चीत्कार,
राजसिपाही दौड़े आये
सुनकर उनका हाहाकार।

पकड़ ले गये नाई को वे
नगर-न्यायपालक के पास,
मणिभद्र भी गया बुलाया
कही बात उसने सब खास।

कही न्यायपालक ने सब सुन—
"दुष्ट नकलची है यह नाई,
चढ़ा इसे दो झट फाँसी पर
की है इसने अति निठुराई।

करता कुछ जो बिना विचारे
कुफल भोगता ही है बाद,
कथा नेवले औ' ब्राह्मण की
अभी था बरबस याद।

एक नेवले को ब्राह्मण ने
दूध पिलाकर पाला था,
रहता घर में सदा उछलता
वह घर का रखवाला था।

किसी कार्य से एक दिवस थी
गयी ब्राह्मणी घर से बाहर,
बच्चे को वह छोड़ गई थी
सोता था जो घरके अन्दर।

इसी बीच में निकला बिल से
एक बड़ा काला-सा विषधर,
उसको दबोचा नेवले ने
और दिये उसके टुकड़े कर ।

ब्राह्मणी ने आकर देखा
लगा नेवले के मुँह रक्त,
जिसको उसने समझ लिया यह
है मेरे बच्चे का रक्त ।

दुःख क्रोध में पागल होकर
दिया नेवले को झट मार,
औ' ब्राह्मण के घर आने पर
लगी सुनाने उसे हज़ार—

"पुत्र-शोक का फल चख लोभी
सुने न तुमने मेरे बोल,
लोभी के सिर चक्र घूमता
सुनो, अभी कहती सब खोल ।

किसी नगर में कभी चार थे
रहते निर्धन विप्रकुमार,
चले खोज में चारों धन की
आपस में कर बहुत विचार ।

बहुत दूर जाने पर उनको
मिला कहीं पर योगी एक,
किया प्रणाम तुरत ही उनको
सबने अपना माथा टेक ।

योगी बोला—'बोलो बच्चो,
कहाँ जा रहे औ' किस हेतु?'
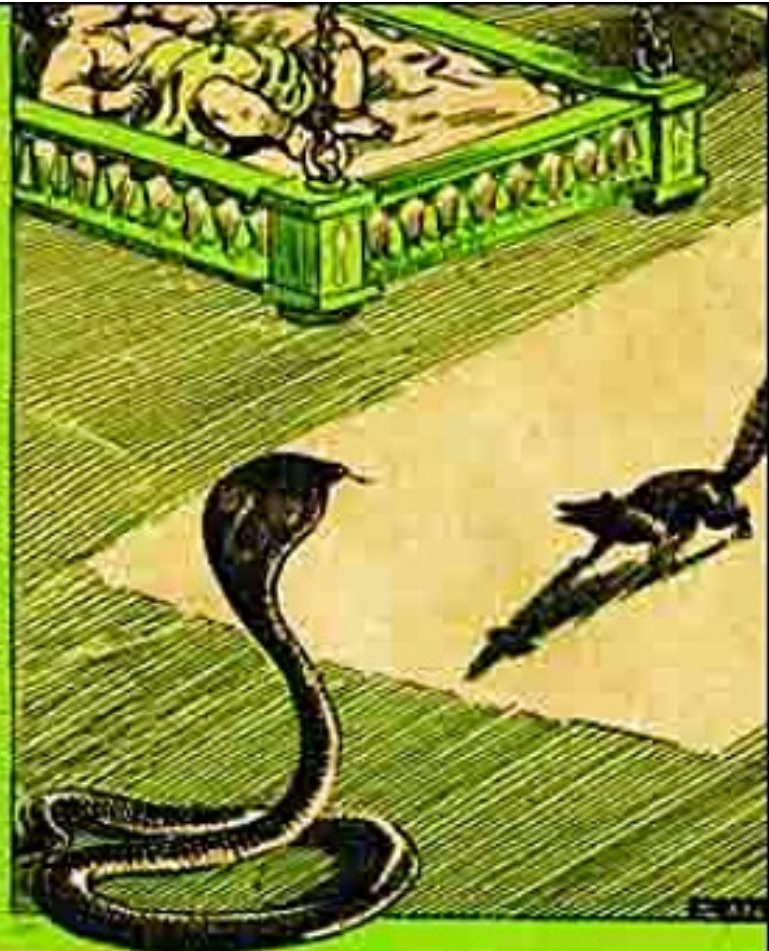
उसपर चारों बोले—'मुनिवर,
निकले हैं हम धन के हेतु ।

या तो हम लायेंगे धन या
खुशी-खुशी हम मृत्यु वरेंगे,
निकले हैं जो निश्चय करके
उससे हम अब नहीं डिगेंगे ।

क्यों बैठें हम भाग्य भरोसे
पौरुष है सबसे बलवान,
दुर्लभ होता सुलभ उन्हें जो
खतरे का करते आह्वान ।

इसीलिए हे मुनिवर, हमको
राह बताएँ ऐसी आप,
जिससे सिद्धि मिले हम सबको
मिटे गरीबी का अभिशाप ।'
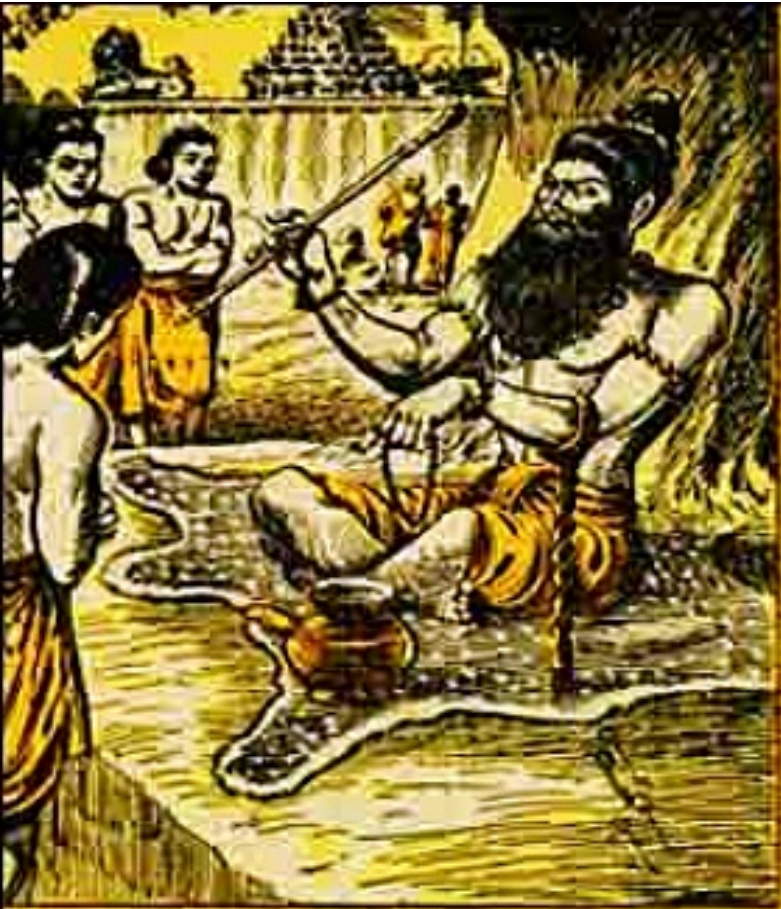
योगी ने तब उन्हें उसी क्षण
सिद्धि-वर्तिकाएं दीं चार,
और कहा—'जाओ तुम चारों
दूर हिमालय के उस पार।

वर्तिकाएं जहाँ गिरेंगी
वहाँ मिलेगा ही धन निश्चय,
सुखी बनोगे फिर तो तुम सब
नहीं मुझे उस में संशय।'

योगी से ले विदा, चले वे
गये बहुत ही जब वे दूर,
एक वर्तिका गिरी जहाँ पर
मिला वहाँ ताम्बा भरपूर।

कहा एक ने 'यह काफी है,
चले यहीं से हम सब लौट!'
किंतु शेष तीनों ही बोले
'नहीं अभी सकते हम लौट।'

तांबा लेकर लौट गया एक
बढ़े यहाँ से आगे तीन,
वर्तिका फिर गिरी दूसरी
चाँदी की थी जहाँ जमीन।

कहा दूसरे ने 'काफी है,
चले यहाँ से हम अब लौट!'
बाकी दोनों बोले लेकिन
'नहीं अभी सकते हम लौट।'

चान्दी लिये दूसरा लौटा
बढ़े शेष दो पथ अनजान,
गिरी तीसरी वर्तिका भी
मिली जहाँ सोने की खान।

कहा तीसरे ने 'अब बस है,
चलें यहाँ से ही हम लौट।'
लेकिन इस पर बोला चौथा
'मैं न अभी सकता हूँ लौट।

पहले तांबा, फिर चाँदी औ'
मिला बाद में है यदि सोना,
तो निश्चय अब रत्न मिलेंगे
जिसे साथ लेंगे मनमाना।'

कहा तीसरे ने 'जाओ तुम,
मैं न बढूँगा आगे और;
जोहूँगा पर बाट तुम्हारी
टिका रहूँगा मैं इस ठौर।'

कवि - कीर्तिदेवी

एक कवि ने जिसको कीर्तिदेवी से प्रेम हो गया था उसको अर्पित करने के लिए कई गीतों की एक माला गूंथी। पर कीर्तिदेवी ने उसकी परवाह न की। औरों की तुच्छ मालायें पहिनकर खुशी से इधर उधर घूमने-फिरने लगी। परन्तु वे मालायें मुरझा गईं।

परन्तु कवि ने अपने गीतों की माला बनाना नहीं छोड़ा। उसका विश्वास था कि कभी न कभी कीर्तिदेवी उसको स्वीकार करने के लिए आयेगी, और सदा अपने गले में उसे पहिनेगी।

परन्तु कीर्तिदेवी ने उसकी तरफ़ देखा तक नहीं।

एक दिन कवि ने उससे कहा—"मैंने तुम्हारे लिये अमर मालायें तैयार की हैं। मेरे पास क्यों नहीं आती? क्यों नहीं उन्हें पहिनती?"

"जल्दी न करो। मैं सौ वर्ष बाद तुम्हें मिलूँगी...." यह कह कीर्तिदेवी बिना रुके हुये चली गई।

डाकू-बड़ा आदमी

विक्रमार्क तो हठी था ही। वह फिर पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव उतार कर कन्धे पर डाल, चुपचाप श्मशान की ओर चल पड़ा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, तुम्हें इस प्रकार कष्ट सहते देख, मुझे बड़ी दया आ रही है। तुम्हें थकान न मालूम हो, इसलिए मैं एक विचित्र नीति कथा सुनाता हूँ। सुनो।" उसने यह कहानी सुनाई।

एक समय था, जब कोशल देश और काशी देश की सीमाओं पर कुछ डाकू रहा करते थे। डाका मारना ही इन लोगों का पुश्तैनी पेशा था। खेतीबाड़ी करना व कोई और पेशा करना, ज्ञान कमाकर पेट भरना, वे बुरा समझते थे। इसलिए वे न पढ़ते-लिखते, न जमीन-जायदाद ही रखना चाहते।

वेताल कथाएँ

इन डाकुओं का एक मुखिया था, जिसका नाम दुर्मुखी था। उसके सात लड़के थे। उनमें छः डाका मारते समय मारे गये थे। अब उसके साथ, उसका सबसे छोटा लड़का गंगाराम रहा करता था।

"बेटा, बाहुबल पर जीना हम लोगों का पारम्परिक सिद्धान्त है। उनकी जिन्दगी भी क्या जिन्दगी है, जो लकड़ी काट कर, घड़े कसोरे बनाकर, मिट्टी खोद कर जिन्दगी बसर करते हैं। तुम मुझे यह वचन दो कि तुम उनकी तरह न जिओगे।" दुर्मुखी अपने लड़के से कहा करता।

गंगाराम भी पिता के अनुरूप लड़का था। पिता जब डाका डालता तो वह भी उसकी मदद किया करता।

दुर्मुखी का एक घर था, घर तो क्या छोटा-मोटा किला-सा था। उसके एक तरफ़ दलदल थी और दूसरी तरफ़ घना जंगल। उस दलदल में से उनके घर का रास्ता, कुछ साथ के डाकुओं को तो मालूम था पर किसी अजनबी को न मालूम था। उस जगह दुर्मुखी ने बड़ा पक्का मकान बनवाया। उसके चारों ओर बड़े-बड़े पत्थरों से दीवार भी बनाई। लोहे के फाटक लगवाये। चार दिवारी के और मकान के बीच के आहाते में उसके पशु, घोड़े वगैरह, रहते।
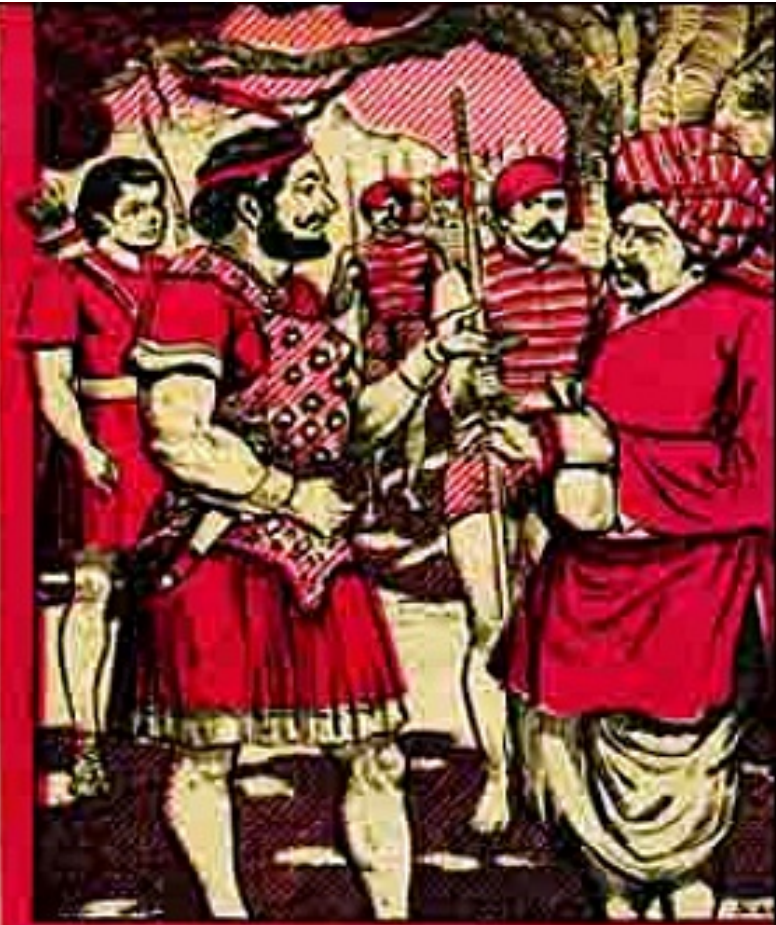
कोशल की राजधानी अयोध्या में राजा मर गया। उसकी कोई सन्तान न थी। इस कारण काशी का राजा ही कोशल देश का भी राजा हो गया। दो राज्य, जो शताब्दियों से अलग-अलग थे, एक राजा के परिपालन में आ गये। काशी राजा अपने नौकर-चाकरों को लेकर अयोध्या पहुँचा और वहाँ उसने वैभव से अपना राज्याभिषेक करवाया।

उसी दिन सीमा के डाकुओं ने खूब डाके भी डाले। अधिकारियों ने आकर राजा से कहा—"महाराज, काशी और कोशल की सीमावाले डाकू फिर सिर उठा रहे हैं। डाका मार रहे हैं।"

"अब काशी और कोशल के बीच में कोई सीमा नहीं है। वह जगह अब हमारे राज्य के ठीक बीच में है। वहाँ रहनेवाले डाकुओं को निर्मूल कर दो।" राजा ने अपने सेनापति को आज्ञा दी।

सेनापति पाँच सौ आदमियों को साथ लेकर सीमा तक गया और वहाँ डाकुओं को पकड़ने लगा। कई डाकुओं ने सेनापति से घूस लेकर और डाकुओं को पकड़वाने में मदद की। जो जो डाकू जब जब मिला, तब तब सेनापति ने उसका सिर कटवा दिया।

यह खबर दुर्मुखी को मिली। उसने अपने लड़के से कहा—"बेटा, गंगा! दुनिया में उथल-पुथल होने जा रही है, अब धर्म न रहेगा। बहादुरों के लिए अपने बाहुबल पर जीने के दिन लद गये, अब किसी की आज्ञानुसार जीने के दिन आ रहे हैं। जहाँ बल, साहस थे, अब वहाँ अधिकार, ओहदे होंगे। परन्तु तुम यह वचन दो कि तुम बहादुरी से जिओगे।"

बाप बेटे जब घर की छत पर बैठे बातें कर रहे थे, तो उस समय दूरी पर उन्हें कुछ घुड़सवारों का आना दिखाई दिया।

"पिताजी, हमारे घर की ओर कुछ सैनिक आ रहे हैं।" गंगाराम ने कहा।

"दलदल में से कैसे आयेंगे? एक-दो ही बिना रास्ता मालूम किये नहीं आ सकते हैं, यह सारी की सारी सेना कैसे

आ सकेगी ! तुम घबराओ मत ।" दुर्मुखी ने कहा ।

"नहीं, पिताजी ! उन्हें कोई रास्ता दिखा रहा है । जो सबके सामने घोड़े पर आ रहा है, उसे अच्छी तरह रास्ता मालूम है । कहीं लोग उसे पहिचान न लें, उसने अपना सिर ढक रखा है ।" गंगाराम ने कहा ।

"कोई नीच हमें धोखा दे रहा है । बेटा, जरा मेरा धनुष-बाण तो लाओ ।" दुर्मुखी ने कहा ।

सैनिकों और सेनापति ने दुर्मुखी का घर घेर लिया ।

"हुजूर, गरीब हूँ । जब इतने अतिथि आये हैं, तो मैं क्या करूँ ! आपके घोड़ों के लिए मेरे पास दाना-पानी भी तो नहीं है ।" दुर्मुखी ने सेनापति से कहा ।

"डाकुओं के सरदार दुर्मुखी तुम ही तो हो ! मेरे बन्दी हो जाओ नहीं तो तुम्हारा, तुम्हारे घर का, सब का सर्वनाश करदेंगे ।" सेनापति ने कहा ।

दुर्मुखी ने सेनापति से कहा—"मैं चोर नहीं हूँ । मैंने लुके छुपे कुछ नहीं किया है । गरीबों को मैंने नहीं सताया

है । जब जब बन पाया है मैंने उनकी मदद ही की है । अनाथ स्त्रियों और बच्चों को मैंने कभी नहीं सताया है । मैं नहीं जान पा रहा हूँ कि आप मुझे क्यों कैद करना चाहते हैं !

सेनापति ने उसकी न सुनी । उसने अपने सैनिकों को आज्ञा दी कि वे घर की चार दिवारी तोड़ दें । तब सूर्यास्त हो चुका था । थोड़ी देर में अन्धेरा होने वाला था ।

जब सैनिकों ने चारदिवारी का एक भाग तोड़ दिया तब गंगाराम ने घर

पर से जलती मशाल पशुओं के बीच फेंकी। पशु डर गए। डर के कारण घोड़े सैनिकों की तरफ भागे। कुहराम मच गया।

उस समय दुर्मुखी गंगाराम को लेकर नीचे उतर आया, उसने अपनी पत्नी और लड़के से विदा लेकर कहा—"तुम आदमियों की तरह जीना। मैं, अगर हो सका जिन्दा ही बाहर जा निकलूँगा। अगर जिन्दा रहा तो कभी न कभी मिलूँगा ही। नहीं तो यह आखिरी दर्शन है।" कहते हुये दुर्मुखी ने अपना गंड़ासा लेकर गंगाराम से कहा—"बेटा, चुपचाप दरवाजा खोलो। मैं बाहर जाऊँगा।"

बाहर सैनिक चिल्ला रहे थे—"बाहर आओ, नहीं तो आग लगा देंगे।" ठीक उसी समय अचानक दरवाजा खुला। गंड़ासा घुमाता, बाण की तरह दुर्मुखी सैनिकों के बीच आ पड़ा। उसे कोई न रोक सका। और तो और जो उसके पास जा सके वे उसके गंड़ासे के शिकार हुए।

सैनिकों से निकलकर दुर्मुखी दल दल से बचकर जंगल में भाग गया। कुछ घुड़सवारों ने अन्धेरे में उसका पीछा किया।

उनमें से एक भी जीवित वापिस न गया। सब के सब दल्दल में फंस गए। दुर्मुखी बचकर भाग गया।

इस बीच सैनिकों ने दुर्मुखी के घर पर हमला किया। अन्दर घना अन्धेरा था। जिस नकाबधारी ने दल्दल में से सैनिकों को रास्ता दिखाया था वह कहीं से एक मशाल लाया। दरवाजे के पास गंगाराम खड़ा था। उसे यह देख बड़ा गुस्सा आया। उसने दीवार पर से गंड़ासा निकाला और उसके हाथ पर जोर से चोट की। उस चोट से मशाल ही न गिरी, उस आदमी के हाथ की अंगुलियाँ भी कट गईं। खून बहने लगा।

आखिर सैनिकों ने दुर्मुखी की पत्नी और लड़के को कैद कर लिया। उसके घर को आग लगाकर वे अयोध्या वापिस चले गए।

वहाँ अदालत में दुर्मुखी की पत्नी व गंगराम को कोई भी सजा न दी गई। "जब बाज़ उड़ गया हो तो इन परिन्दों को पकड़ कर लाने से क्या फायदा?" न्यायाधिकारी ने उनसे पूछा। "मेरे पति को पकड़ लिया। मेरा घर जला दिया। हम अब कहाँ जायें!" कहकर दुर्मुखी की पत्नी रोई।

देख दया आई। उसने उसको अपने पशुओं की देखमाल करने के लिए वेतन पर रख लिया।

गंगाराम का जीवन पूरी तरह बदल गया। उसके साथ उसके विचार भी बदल गये। परन्तु कभी कभी अपने शत्रुओं से बदला लेने की सोचता। गंगाराम अब जानता था कि वह आदमी कौन था, जिसने उस दिन मुख ढक कर सैनिकों की मदद की थी। उसका नाम रुद्र था। उसका घर दुर्मुखी के घर के पास ही था। उसके दायें हाथ में दो अंगुलियाँ ही थीं।

जब कभी रुद्र को देखता तो गंगाराम का खून खौल उठता। परन्तु गंगाराम ने जल्दबाजी में कुछ न किया।

बहुत साल गुजर गए। गंगाराम की उम्र पच्चीस वर्ष की थी कि कोई उत्सव आया। दंगल हुए। रुद्र और गंगाराम का मल्लयुद्ध हुआ। कुश्ती में जब गंगाराम नीचे था और वह ऊपर तब रुद्र ने कहीं से एक चाकू निकाला और गंगाराम के पेट में भोंक दिया। वह दुबारा भोंकनेवाला था कि गंगाराम ने उसके हाथ से चाकू ले लिया और उसकी छाती

"मैं फिर मकान बनाऊँगा। आओ माँ।" कहकर गंगाराम अपनी माँ को उस जगह लेगया जहाँ पहिले उनका घर था। वह माँ बेटे ने एक कुटिया बनाली। पर खाने के लिए कुछ न था। खरगोश जैसे जानवरों को गंगाराम मार कर खाने के लिए लाता। फिर गंगाराम की माँ बीमार पड़ी और एक सप्ताह में चल बसी। गंगाराम बिलकुल बेसहारा हो गया। उसने अपनी माँ को पास में ही दबा दिया।

गंगाराम की स्थिति सब को मालूम हो गई। पास में रहने वाले रईस को उसे

में झोंक दिया। मगर वह डर गया। यह सोचकर कि इस गल्ती के करने पर, सब मिलकर उसे मार देंगे, वह वहाँ से भाग गया।

वह रात दिन भागकर थोड़े दिनों बाद एक दूर देश में गया। वहाँ एक धर्मशाला में ठहरा। उसी दिन वहाँ एक बूढ़ा भिखारी भी आया। भिखारी को अपनी ओर गौर से देखता देख, गंगाराम को बुरा लगा।

अगले दिन जब वह जा रहा था, तब भिखारी भी उसके साथ आने लगा।

"तुम कौन हो! तुम्हें मुझ से क्या काम है!" गंगाराम ने भिखारी से पूछा।

"तुम शायद दक्षिण देश जा रहे हो। मैं भी उसी ओर जा रहा हूँ। आखिर आदमी ही तो आदमी का साथी है, अच्छा, खैर, तुम्हारा नाम क्या है!" भिखारी ने पूछा।

"मेरा नाम गंगाराम है।" गंगाराम ने कहा।

"तुम्हारे पिता का नाम क्या है!" भिखारी ने फिर पूछा।

गंगाराम ने जब जवाब दिया, तो उस भिखारी ने उसे गले लगाकर कहा—

"बेटा, मैं तेरा पिता ही हूँ। क्या तुम्हारी माँ ठीक है! तुम कहाँ जा रहे हो! क्यों जा रहे हो!" उसने पूछा।

गंगाराम ने पिता को सब कुछ बताया।

"बेटा, सिर्फ इसीलिए भागे जा रहे हो! जाने की ज़रूरत नहीं। हमारे पास इतना सोना है कि हम किसी भी अन्याय को ठीक कर सकते हैं। मैं बहुत-से देश घूमा-फिरा। सैनिक का काम करके मैंने काफ़ी कमाया भी है। कोई यह न जाने कि मेरे पास इतना धन है, इसलिए मैंने यह भिखारी का वेष धारण कर रखा है।

आओ, चलो चलें। चिन्ता न करो।" दुर्मुखी ने कहा।

जैसा दुर्मुखी ने कहा था, वैसा ही हुआ। गंगाराम की चोट के कारण रुद्र मरा नहीं। अधिकारियों ने घूस लेकर, रुद्र ने जो शिकायत गंगाराम पर कर रखी थी, यह कहकर रद्द कर दी थी कि कोई गवाह न था। यह जानकर कि दुर्मुखी काफ़ी धन लेकर आया है....बड़े बड़े लोगों ने उससे दोस्ती की। उस रईस ने, जिसने गंगाराम को नौकर रखा था, उसके साथ अपनी लड़की की शादी भी की।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजा, मुझे एक सन्देह है। जब वह अपने विचार में अच्छे ढंग से जी रहा था, तब अधिकारियों ने दुर्मुखी को क्यों दोषी माना। फिर जब उसने पैसा कमाकर न्याय की आँखों में धूल फेंकी तो लोगों ने उसको बड़ा आदमी क्यों समझा! अगर तुमने इस प्रश्न का जानबूझकर उत्तर न दिया तो तेरा सिर फूट जायेगा।"

"इसमें कोई फ़ायदा नहीं है, अगर कोई यह सोचे कि वह नीतिपूर्वक जीवन बिता रहा है। जब समाज में नैतिक परिवर्तन होता है, तब मनुष्य को भी अपनी निजी व्यवहार में उसके अनुसार परिवर्तन करने चाहिए। दुर्मुखी जब डाकू था, तब वह अपने बाप दादाओं की परिपाटी ही निभा रहा था। जब धन लेकर वह वापिस आया, तब वह उस समय के समाज की परिपाटी का पालन कर रहा था। इसीलिए एक दिन का डाकू बड़ा आदमी बन गया।" विक्रमार्क ने कहा।

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

यह क्या कर रहे हो!
पेड़ों को पानी देने के लिए तुमने ही
तो कहा था।

बेटा, खूब डुबकी लगाकर नहाओ।
मैं तुम पर वर्षा नहीं गिरने
दूँगी।

लड़का (अन्धे से) बाबा, उस कमरे में
अन्धेरा है। ठहरो, मैं अभी टॉर्च
लाता हूँ।

मैं, एक छलांग में इस नहर के पार आ कूदूँगा।
नहीं, नहीं, यह नहर बहुत चौड़ी है। इसलिये
दो छलांग में कूदना।

दक्षिण ध्रुव के आश्चर्य

हम सब जानते हैं कि भूमि के उत्तर और दक्षिण ध्रुव हैं। जहाँ उत्तर ध्रुव है, वहाँ समुद्र मात्र है। परन्तु दक्षिणी ध्रुव के प्रदेश में एक महाद्वीप-सा है। उसका क्षेत्रफल, दक्षिण अमेरिका से कुछ कम है, ६२ लाख वर्गमील।

परन्तु इस महाद्वीप के बारे में हम करीब करीब कुछ भी नहीं जानते। इसका पता सौ वर्ष पूर्व ही लगा है। यहाँ क्योंकि हमेशा बर्फ़ रहती है, इसलिए न यहाँ मनुष्य ही रह सकते हैं न और जानवर ही। इस महाद्वीप को एन्टार्कटिक कहा जाता है। पिछले सौ वर्षों में यहाँ ६०० आदमी भी नहीं रहे हैं। एन्टार्कटिक तट की लम्बाई १६०,०० मील है। अन्दाज़ लगाया जा सकता है कि यह कितना बड़ा भूभाग है।

एन्टार्कटिक के बारे में, कई ब्रिटिश, आस्ट्रेलियन, अमेरिकन, रूसी, फ्रेन्च अन्वेषकों ने बहुत-सी बातें मालूम की हैं। उनमें से कई अन्वेषण में अपने प्राण भी खो बैठे। विज्ञान और साधनों के वृद्धि के कारण उनके अन्वेषणों का परिणाम अब दृष्टिगोचर हो रहा है। नई जानकारी मिल रही है।

सब देशों के वैज्ञानिक अब भूशास्त्र के क्षेत्र में नये नये परिशोधन कर रहे हैं। इस परिशोधन में रूस, अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रान्स आदि, भी हिस्सा ले रहे हैं। इस परिशोधन के फलस्वरूप, हमें भविष्य में दक्षिण ध्रुव के बारे में बहुत-सी अद्भुत बातें मालूम हो सकेंगी। सम्भव है उनमें कई ऐसी बातें हों, जिनकी हमने कल्पना भी न की हो। हम अब यहाँ

उस परिशोधन का उल्लेख करेंगे, जो एडमिरल बर्ड के नेतृत्व में, १९४७ में किया गया था।

बहुत तैयारी के बाद बर्ड एन्टार्कटिक के लिए रवाना हुआ। वह पहिले भी कई बार एन्टार्कटिक गया था। यही नहीं, १९४० में सर्व प्रथम वायुयान में दक्षिणी ध्रुव पर वह उड़ा भी था। इस बार इसके साथ १३ जहाज़, ४००० आदमी, कितने ही वैज्ञानिक उपकरण और ऐसे वायुयान जो पानी में और बर्फ़ पर उड़ सकते थे। जहाज़ों में दो जहाज़ ऐसे थे, जो बर्फ़ को काटकर रास्ता बनाती थीं। वायुयान से फोटोग्राफ लेने के लिए विशेष कैमरे थे। ध्रुव में वातावरण व खनिज पदार्थों का अध्ययन करने के लिए अच्छे विशेषज्ञ थे। वे सब दक्षिण ध्रुव की यात्रा के अभ्यस्त थे। सब आवश्यक सामग्री उनके पास थी।

बर्ड के साथ गये आदमियों के तीन दल बनाये गये। दो दल, एन्टार्कटिक के पश्चिम और पूर्वी तटों का अन्वेषण करने के लिए नियुक्त किये गये क्योंकि इन तटों के बारे में किसी को कुछ न मालूम था।
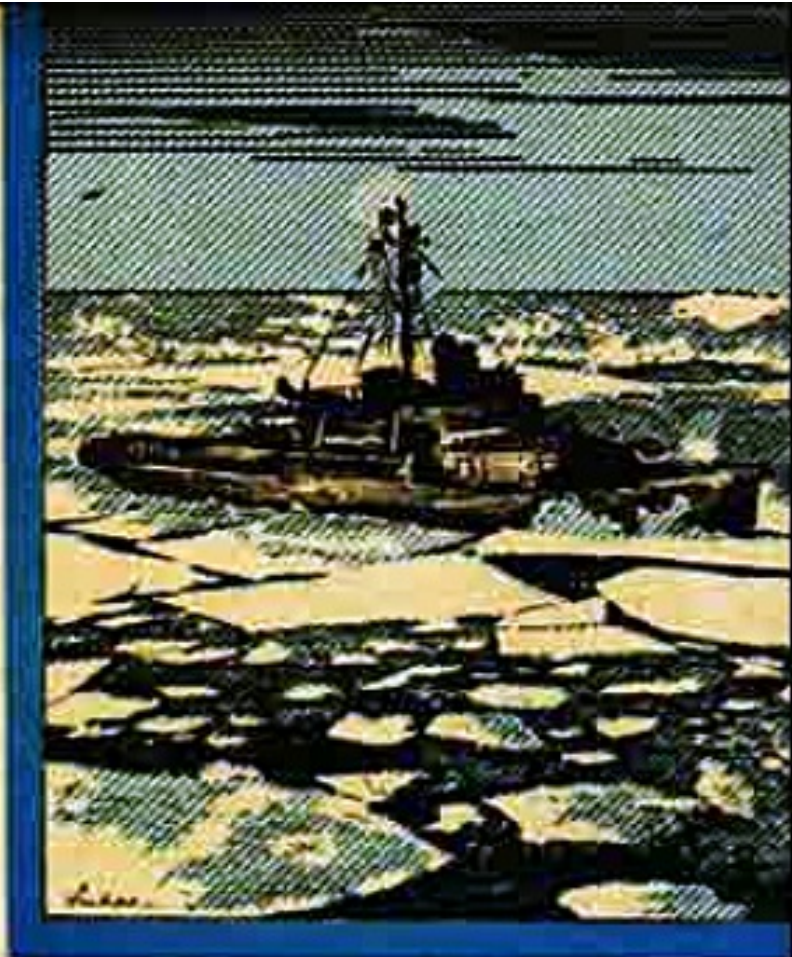
सारा द्वीप सैकड़ों फीट बर्फ़ से ढका हुआ था। बर्फ़ के टुकड़े, भूमि को पार कर समुद्र में आगे बढ़ आते है। इस द्वीप के चारों ओर के समुद्र में भी बहुत कुछ बर्फ़ रहता है। यह जानना मुश्किल हो जाता है कि समुद्र का बर्फ़ कहाँ शुरु होता है और कहाँ भूमि का तट शुरु होता है। दोनों मिलेजुले-से रहते हैं।

तीसरे दल को एन्टार्कटिक के मध्य क्षेत्र में घूमना था। घूम फिरकर वहाँ के फ़ोटो लेने थे। इस दल का नायक स्वयं बर्ड था। इस दल के पास चार जहाज़,

दो मील ऊँचे हैं। उनमें के एक का शिखर स्काट द्वीप कहलाता है। दूसरे पर्वत का शिखर पानी से १०० फीट नीचे है। पहिले पहल बर्ड ने ही यह पता लगाया था। उससे पहिले किसी को यह न मालूम था।

स्काट और दक्षिण ध्रुव के बीचवाले समुद्र को रास समुद्र का जाता है। १८४१ में सर जेम्स क्लार्क रास, नौका में, इस समुद्र में गया। ग्रीष्म में, जब सूर्य दक्षिणायन में होता है, समुद्र १०० मील तक हिममय नहीं होता। उस समय बर्फ के टुकड़े अलग अलग तैरते रहते हैं। इनको पार करने के बाद ऐसा समुद्र दिखाई देता है, जिसमें बर्फ नहीं होता। यह पानी जाकर एक महान बर्फ की दीवार के पास रुक जाता है। यह बर्फ की दीवार ४० फीट से अस्सी फ़ीट ऊँची होती है। इसी बर्फ की दीवार के पीछे—एक विस्तृत बर्फ का तख्त-सा होता है जो सीधे दक्षिणी ध्रुव के पठार तक पहुँचता है।

१. जनवरी १९४१ इस दल ने रास समुद्र में यात्रा प्रारम्भ की।

एक बर्फ़ काटनेवाला जहाज़, तम्बू आदि के लिए अवश्यक सामग्री वगैरह थी। यह दल १९४६ दिसम्बर ३१ को स्कोट द्वीप पहुँचा। (केप्टिन रोबर्ट स्कोट नाम का सुप्रसिद्ध अन्वेषक बहुत साल पहिले दक्षिण ध्रुव मालूम करने पैदल निकला। वह वहाँ पहुँच न सका और रास्ते में मर गया।)

इस स्कोट द्वीप से ३०० मील दूरी तक कहीं भूमि न थी। यह एक काला पत्थर सा है,—जो समुद्र के ऊपर उठ आया है। यहाँ समुद्र में दो पर्वत हैं, और दोनों

"नार्थ विन्ड—"नाम का हिमविच्छेदक जहाज़, आगे बर्फ काटता चला आता था। उसके पीछे और जहाज़ आ रहे थे। पहिले तो बर्फ की परत पतली और मुलायम थी—जहाज़ों के लिए रास्ता मिल गया। बर्फ के काटने पर पानी भी दिखाई देता था।

परन्तु थोड़ी दूर जाने के बाद वातावरण में कुछ ऐसा परिवर्तन हुआ कि जहाज़ के चारों ओर का समुद्र जिधर देखो उधर जम गया। जमकर पथरा-सा गया। दूर तक सब सफ़ेद ही सफ़ेद था।

स्काट द्वीप से, तिमंगलों का समुद्र ८०० मील है।

१९३२ बर्ड, जब इस समुद्र से गुज़रा था, उसे कहीं कोई बर्फ न दिखाई दी थी। १९४६. में उसने यह आठ सौ मील का फासला २४ घंटे में तय किया था। परन्तु इस बार यह रास्ता उन्होंने १६ रोज़ में खतम किया। जहाज़ों के चारों ओर समुद्र इस तरह जम गया था कि वे रोज़ एक दो मील से अधिक न जा पाते। और वह भी बहुत मुश्किल से। इन पन्द्रह दिनों में, तीन दिन वे पीछे भी

गये। बर्फ उनको रोज ६ मील पीछे धकेल देती थी।

"नार्थ विन्ड" का वजन ६,६०० टन था। वह तीन फीट बर्फ में भी आसानी से आ सकता था। ३० फीट ऊँचे बर्फ को वह एक घंटे में साफ कर सकता था। चूँकि चारों ओर बर्फ का दबाव था, जो कुछ बर्फ "नार्थ विन्ड" काटता, वह और जहाज़ों के आने से पहिले फिर यथास्थान आ जाता। और जहाज़ आगे न आ पाते।

इस कारण इस यात्रा में जहाज़ों को खूब चोट लगी। घंटे में एक बार हेलिकोप्टर यह जानने के लिये भेजे गये कहीं पानी था कि नहीं। कहीं भी पानी न था। पन्द्रहवें दिन जब वे बर्फ से निकले तो उनको "रोस बर्फ की दीवार" ठीक सामने दिखाई दी।

इस बर्फ की दीवार से, तिमिंगलों के समुद्र का रास्ता है। जब १८४०, बर्ड इस रास्ते आया था, वह रास्ता डेढ़ मील चौड़ा था। अब केवल २०० गज ही रह गया था।

एन्टार्कटिक जानेवाले जहाज़ों के लिए, तिमिंगल शाखा के बन्दरगाह के सिवाय कहीं और कोई बन्दरगाह नहीं मिलता। यहाँ जहाज़ लंगर डाल सकते हैं। अगर इसके किनारे वायुयान उतारे गये तो वे भी आसानी से दक्षिण ध्रुव जाकर आ सकते हैं।

इस समुद्र की शाखा को देखने के लिये हेलिकोप्टर उड़ाया गया। ढाई वर्ग मील के सिवाय, सब जगह आठ फीट नहीं तो पन्द्रह, बीस फीट तक बर्फ जमा हुआ था। तीन दिन तक, "नोर्थ विन्ड" के डेढ़ करोड़ टन बर्फ के काटने के बाद, और जहाज बन्दरगाह में सुरक्षित पहुँच सकें। [अभी है]

[४]

जब सिद्धार्थ उरुवेल वन में तपस्या कर रहे थे, उनके पास पाँच ब्राह्मण आये। उनके नाम, कौन्डिन्य, भद्राजी, वप्र, महनाम, और अश्वाजी थे। वे यहीं जानकर आये थे कि वे बुद्धत्व प्राप्त करने के लिए तपस्या कर रहे थे। वे सिद्धार्थ की सेवा शुश्रुषा करने लगे। वे रोज सोचते-कहते—"ये जरूर कल बुद्ध होंगे।" उनकी सेवा शुश्रुषा के कारण सिद्धार्थ का समय सुख से कटने लगा।

"तपस्वी के लिए सुख ठीक नहीं, शरीर के तपने पर ही तपस्या सफल होती है। तपस्या जितनी कठिन होती है, उतनी जल्दी ही सफलता मिलती है। मनुष्य के लिए रत्ती भर भोजन भी काफी है।" यह सोच सिद्धार्थ उपवास-व्रत आदि करने लगे।

इन उपवासों के कारण, सिद्धार्थ का गोरा सुनहला रंग, सूखकर काला हो गया। उनके शरीर के बत्तीस शुभ लक्षण भी न दीख पड़ते थे। वे बहुत बलवान थे, पर वे तब खड़े भी न हो पाते थे। उनका पेट, पीठ से लग गया था। एक दिन रात को, तीसरे पहर, निर्बलता के कारण वे बेहोश भी हो गये।

"विचारा महाराजा का लड़का है। बुद्धत्व के लिए तपस्या शुरू तो की पर तपस्या सफल न हुई। अब बिचारे के प्राण जा रहे हैं।"—वन में रहनेवाले तपस्वियों ने कहा।

यह खबर कि सिद्धार्थ मर गये हैं कपिलवस्तु भी पहुँची। शुद्धोधन महाराजा ने इस पर विश्वास न किया, उनका विश्वास था, क्योंकि सिद्धार्थ सम्राट न बने थे, इसलिये वे बुद्ध बनेंगे।

वस्तुतः सिद्धार्थ मरे न थे। होश आते ही, वे भिक्षा पात्र लेकर निकल पड़े। वे जान गये कि व्रत उपवासों द्वारा बुद्धत्व प्राप्त करना असम्भव था। उन्होंने जब भोजन करना प्रारम्भ किया तो सूखा शरीर फिर भरने लगा। उनके शुभ लक्षण पहिले की तरह शरीर पर दिखाई देने लगे।

परन्तु सेवा-शुश्रूषा करनेवाले ब्राह्मणों ने कहा—"यह तपस्वी छः वर्ष कठोर तपस्या करने के बाद भी बुद्धत्व न प्राप्त कर सका। फिर से पेट भर खाने लगा है।" और वे उन्हें छोड़ चले गये।

उन दिनों, ऊरुवेल वन के पास सेनानी नाम का एक उत्तम क्षत्रिय, एक गाँव में

रहा करता था। उस ग्राम का नाम भी सेनानी था। उसके एक लड़की थी। उसका नाम सुजाता था। उसने प्रतिज्ञा कर रखी थी कि यदि उसको अच्छा पति मिला और पहिले पहल लड़का पैदा हुआ, तो वह अजापाल देवता पर नैवेद्य चढ़ायेगी। सुना जाता था कि यह अजापाल देवता "नुगा" पेड़ पर रहा करता था।

सुजाता की इच्छा के अनुसार काशी के रहनेवाले एक उत्तम क्षत्रिय के साथ उसका विवाह हुआ और जल्दी ही उसके एक लड़का भी पैदा हुआ। इसलिये, वैशाख पूर्णिमा के दिन, उसने गौ के दूध से खीर तैयार की। और अपनी नौकरानी पूर्णा से पेड़ के पास जगह साफ़ करने के लिए कहा।

जब पूर्णा पेड़ के पास गई तो सिद्धार्थ उस पेड़ के नीचे बैठे थे। उनके शरीर से कान्ति निकलती देख, पूर्णा ने सोचा कि वे ही देवता थे। वह घर भागी भागी गई। उसने सुजाता से कहा—"मालकिन, आपका नैवेद्य लेने के लिए स्वयं अजापाल देवता आये हैं। पेड़ के नीचे बैठे हैं।"

यह सुन सुजाता ने सन्तुष्ट हो कर पूर्णा से कहा—"अगर यह सच है तो, मैं तुझे अपनी लड़की मानकर पालूँगी, पोसूँगी, और तुझे अच्छे अच्छे गहने दूँगी।" उसने अपने अच्छे कपड़े पहिने, अपने कीमती गहने लगाये—एक सोने के पात्र में खीर लेकर, अपनी नौकरानियों को लेकर—पेड़ के पास गई। सिद्धार्थ को देखते ही वह बहुत प्रसन्न हुई। उसके सामने खीर रखकर उसने कहा—"मेरी इच्छा पूर्ण हो गई है, उसी तरह आपकी इच्छा भी पूरी हो।"

सिद्धार्थ के खीर खाने के बाद, हाथ धोने के लिए उनको सुगन्धित जल देकर सुजाता अपने घर वापिस चली गई। सिद्धार्थ भी वहाँ से उठकर, निरंजर नदी के पास गये। सुप्रतिष्ठित नाम की जगह पर उन्होंने स्नान किया। फिर वे उस नदी के किनारे वाले जंगल में चले गये। दिन भर एक शाल वृक्ष के नीचे बैठे रहे।

अन्धेरा होते ही, सिद्धार्थ शाल वृक्ष के नीचे से उठकर एक बढ़ के पेड़ की ओर जाने लगे। रास्ते में उन्हें एक ब्राह्मण मिला। उसने उनको दूब की घास दी। सिद्धार्थ ने बढ़ के चारों ओर देखा। पूर्व की ओर कुछ सम प्रदेश देखकर—दूब घास वहाँ बिछाकर वे बैठे गये।

सिद्धार्थ का बुद्धत्व पाने का समय चूंकि पास आ गया था, इसलिये मन्मथ ने उनके मन को विचलित करना चाहा। पिछले छः सालों से मन्मथ इसी काम पर लगा हुआ था। परन्तु वह सफल न हुआ था। इस बार उसने और जोर से प्रयत्न करने की ठानी। इसलिये वह अपने नौकर चाकरों को लेकर, अनेक आयुधों को लेकर, सेना-सहित इस प्रकार आया, जैसे

रेत बरसाया। और भी कई तरह से उसने बुद्ध को नाश करना चाहा। पर असफल रहा। फिर उसने, अपने गिरि मेखला नाम के हाथी पर चढ़कर, सिद्धार्थ पर अपना चक्र फेंका। वह भी व्यर्थ गया।

मन्मथ पराजित होकर भाग निकला। पिता को पराजित देख कर, मन्मथ की तीन लड़कियों ने सुन्दर वस्त्र धारण किये और सिद्धार्थ को अपने पाश में डालने का प्रयत्न किया। उन्होंने पूछा—"इतने सुन्दर हो। क्यों जंगल में तपस्या कर रहे हो? क्या तुम्हारी पत्नी नहीं है? क्या उससे झगड़कर आये हो? या किसी ने तुम्हारा प्रेम ठुकरा दिया है?"—परन्तु सिद्धार्थ ने उनकी ओर देखा तक न। इसलिये वे भी चली गईं।

मन्मथ को पराजित करते ही सिद्धार्थ को बुद्धत्व मिल गया। शतकोटि ब्रह्माण्डों में, सब समयों में, जितनी बातें हो गई थीं वे सब उनकी आँखों के सामने आ गईं। वे यह भी जान गये कि प्राणी क्यों जन्म जन्म के फेरे में फँसा हुआ था। अगले दिन सवेरा होने से पहिले उनकी

बाकी इच्छायें भी निर्मूल हो गईं। वे बुद्ध बन गये। उनके शरीर से छः प्रकार के रंगों की किरणें निकलने लगीं। सिद्धार्थ के जन्म के समय जो अद्भुत बातें हुई थीं, वे फिर हुईं।

बुद्ध सप्ताह भर उस बड़ के पेड़ के नीचे बैठे रहे। क्योंकि उस वृक्ष के नीचे, वे बुद्ध बने थे, इसलिये उस वृक्ष का नाम बोधिवृक्ष पड़ा।

फिर बुद्ध वायु में उठे, वहाँ एक क्षण रह कर, बोधिवृक्ष के ईशान्य दिशा में, ज़मीन पर उतरे। उन्होंने सात दिन तक, बिना पलक मारे लगातार, बोधि वृक्ष को सामने रखकर आराधना की। उस प्रदेश को अनिमिष लोचन चैत्य कहते हैं।

फिर बुद्ध, अपनी जगह से बोधि वृक्ष तक—आगे पीछे, सप्ताह भर चलते रहे। जहाँ वे चले थे उस प्रदेश को चंक्रमण चैत्य कहते हैं।

फिर बुद्ध ने बोधिवृक्ष के वायव्य दिशा में बैठकर, सप्ताह पर धर्म के बारे में विचार किया। जहाँ वे यह करने के लिए बैठे थे, उसको रतन घर चैत्य कहते हैं। बुद्ध ने पाँचवा सप्ताह, अजापाल वृक्ष के नीचे, निर्वाण का आनन्द लेते बिताया। छठा सप्ताह, मचलिन्द झील के पास, एक पेड़ के नीचे बिताया। उस सप्ताह खूब वर्षा हुई। कहा जाता है तब मचलिन्द झील से नागराज आया और अपना फण छाने की तरह उसने बुद्ध पर रखा ताकि उन पर वर्षा न हो। यह सप्ताह बुद्ध ने ध्यान में काटा। सातवाँ सप्ताह वे जंगल में पत्थरों पर लेटे। इन सात सप्ताहों में उन्होंने किसी प्रकार का भी भोजन न छुआ। (अभी है)

[४]

तीसरे दिन आधी रात के समय, एक सैनिक, खालीद के तम्बू में हड़बड़ाता घुसा। उसके हाथ में पेटी का टुकड़ा था। खालीद ने उस टुकड़े को उसके हाथ से तुरत ले लिया। उसने उस सैनिक को सोने की मोहरें देते हुए पूछा—"यह तुम्हें कैसे मिला!"

"यहाँ से उत्तर में एक दिन का रास्ता है। हम शत्रुओं के बारे में जानकारी पाने के लिए घूम रहे थे कि चार सीरियन, एक गड़रिये की मदद से रास्ता मालूम करते वहाँ आये। जिस घोड़े पर गड़रिया सवार था, उसके माथे पर यह टुकड़ा बन्धा हुआ था। हमने उस पर हमला करके इसको ले लिया।" सैनिक ने कहा।

सैनिक के जाने के बाद खालीद ने उस टुकड़े को गौर से देखा। उसे दो तहों में रखकर सिया गया था। उसने तहें खोलकर उसमें लिखा सन्देश पढ़ा। "जबाबल उत्तर में, दो रोज के रास्ते पर है। कल, मान्यूल, जबाबल से छः रोज पीछे था। जब मैं जबाबल की सेना से मिला वह और तीन दिन पीछे था। वह जब दो रोज पीछे हो तब जबाबल के साठ हज़ार आदमियों को मार देना होगा।"

खालीद ने तुरत हुक्म दिया। दस हज़ार घुड़सवार, पन्द्रह हज़ार ऊँट सवारों को उत्तर की ओर भेजा। जबाबल की सेना को नष्ट करके, पाँचवें रोज सवेरे, अपने डेरों में वे लौट आये।

मोहम्मद यूसुफ

कुछ दिनों बाद, एक और पेटी का टुकड़ा खालीद के सैनिकों के हाथ लगा। एक काफिला खालीद की डेरों की तरफ़ आ रहा था। उस काफ़िले के पहिले ऊँट के माथे पर यह टुकड़ा बँधा हुआ था। उस काफिलेवाले ने कहा—

यह काफिला मान्यूल की सेना को रसद पहुँचा रहा था। उन्हें एक लड़का मिला। उसने कहा—"अगर तुमने यह रसद मान्यूल को दी, तो वह भाड़ा तो देगा नहीं, तुम्हें कैद भी कर लेगा। तुम दक्षिण में, खालीद की सेना के पास जाओ। मैं तुम्हारे पहिले ऊँट के माथे पर यह तावीज बाँधता हूँ। इसके कारण तुम्हें फायदा होगा। और तुम्हारी इज्ज़त बढ़ेगी।" काफिला उसकी बात मानकर सीधा खालीद के शिविर पर चला आया। उसमें अनाज ढोनेवाले डेढ़ सौ ऊँट थे।

खालीद ने वह टुकड़ा खोलकर पढ़ा—"मान्यूल के सैनिकों के पास रसद नहीं है। उनकी रसद पाँच छः दिन के फासले पर है।"

मान्यूल की सेना को रसद न पहुँचने की जो चाल कनाना ने चली थी, उसे जानकर खालीद हँसा।

* * *

उसी दिन रात, मान्यूल ने अपनी सेना के साथ खालीद के शिविर के उत्तर में अपना डेरा डाला। मैदान के बीच में एक पहाड़ी पर, उसने अपना एक किला-सा बनाया। वहाँ से मुसलमानों की सारी सेना दिखाई देती थी।

"तुम सवेरे हमारे डेरे में आकर हमसे सन्धि की बातचीत करो। यह भी वचन दो कि तुम सीरिया में कभी पैर न रखोगे, तभी तुम्हारी सेना सुरक्षित वापिस पहुँच

सकेगी।" मान्यूल ने अगले दिन मुसलमान सेनापतियों को यह खबर भेजी।

सब खुश हुये। पर खालीद ने कहा—"जबाबल को मत भूलना।" उसका ख्याल था कि अगर भूखे सैनिकों पर तुरत हमला किया गया तो विजय अवश्य होगी।

आधा घंटा बाद मुसलमान सेना युद्ध के लिए निकल पड़ी। उस दिन सीरिया के मैदान में एक ऐसा युद्ध हुआ जिसके बारे में न कभी कहा गया था, न सुना ही गया था। तीन बार बदावी की सेना, मामूली धावे का मुकाबला न कर सकी और पीछे हट गई। तीसरी बार, उनकी स्त्रियों, बच्चों ने प्रोत्साहित करके उन्हें मैदान में भेजा।

जब अन्धेरा हुआ तो ऐसी हालत थी कि किसी की विजय न हुई थी। परन्तु बहुत से बदावी, ग्रीक सेना के हाथ पकड़े गये। उनमें से कई ने ग्रीक सेना में, कनाना को घूमते-फिरते पहिचाना। यह जानकर उन्हें बड़ा गुस्सा आया कि जबाबल की सेना के नष्ट किये जाने के बाद, उनके साथ कनाना भाग गया था। और अब मान्यूल की सेना में भरती हो गया था।
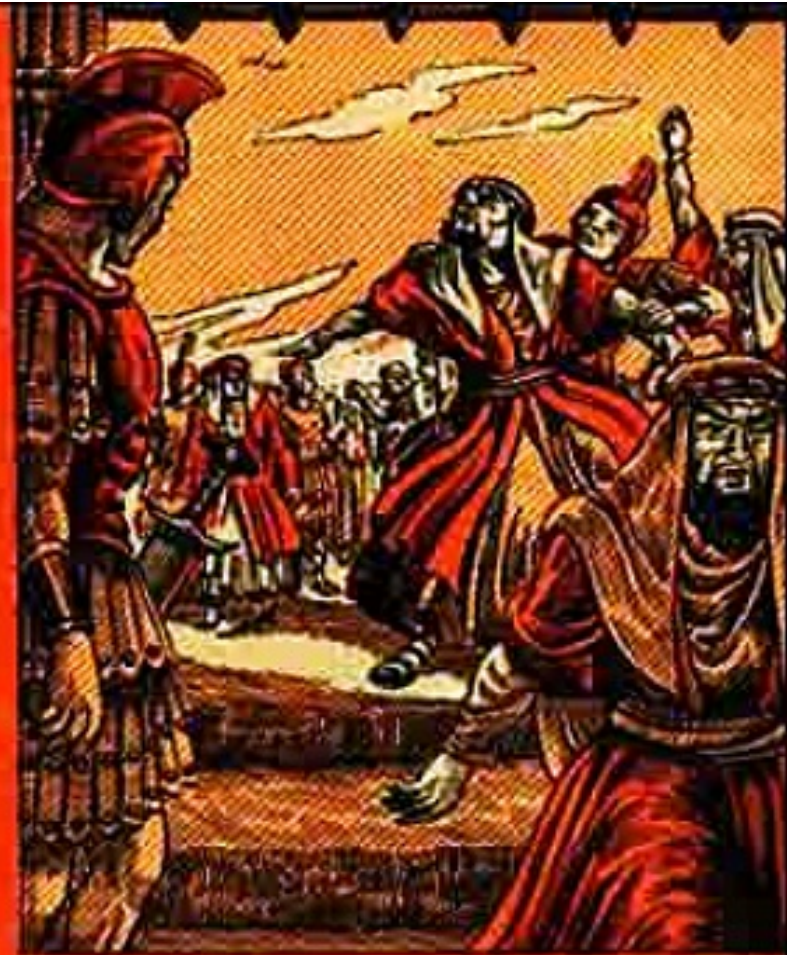
"यह नीच हार से डरकर, अरेबिया के लिए न लड़कर, अब यहाँ आकर छुपा हुआ है।" सोचकर उन्होंने शत्रुओं से कहा—"यह जबाबल का नौकर नहीं है। खालीद की सेना का बदावी है।" तुरत ग्रीक सैनिकों ने कनाना को बाँध दिया और उसको मान्यूल के पास ले गये।

उससे पहिले ही मान्यूल को मालूम हो गया था कि किसी ने जबाबल की सेना और उसकी सेना के बारे में भेद शत्रु को पहुँचा दिया थे। इसलिए कनाना को

जिम्मेवार समझ, उसे मारने के लिए वह अपनी तलवार लेकर लपका।

कनाना ने अपराध स्वीकार तो कर लिया परन्तु तलवार के कारण डरा नहीं। "क्या तुझे मरने से डर नहीं है!" मान्यूल ने पूछा।

"मुझे डर नहीं है।" कनाना ने कहा।

"इसके लिए मौत की सज़ा काफ़ी नहीं है। इसकी बोटी-बोटी कटवानी होगी। इसको ले जाकर कहीं रखो।" मान्यूल ने अपने सैनिकों से कहा।

दूसरे और तीसरे दिन भी, युद्ध में किसी की विजय न हुई। बदावी जी जान से, "अरेबिया के लिए, अल्लाह के लिए" लड़ रहे थे। इस बार एक सैनिक भी नहीं भागा। ग्रीक सेना को ऐसा लगा, जैसे वे पहाड़ से लड़ रहे हों। वे एक कदम भी आगे न रख पाये। बदावी सेना भी एक कदम पीछे न हटी।

खालीद ने सोचा कि चौथे दिन मालूम हो जायेगा कि विजय किसकी होती है। परन्तु उसके दिल में विश्वास जाता रहा था कि वह जीतेगा। वह न चाहता था

कि युद्ध में और कुर्बान हों, उसने अपने को कुर्बान करने की ठानी।

सैनिकों के पीछे जो स्त्रियाँ व बच्चे आ रहे थे—खालीद ने उनको, उस रात भेज देना का निश्चय किया। उनको जितनी दूर सम्भव था, उतनी दूर भेजकर, वह और उसकी तरह देश के लिए आहुति होने को तैयार उसके सैनिक युद्ध-भूमि में जायेंगे। बाकी सैनिक मक्का-मदीना जायेंगे। कम से कम उस पवित्र-स्थलों को शत्रु के हाथ में पकड़ने से बचायेंगे। यह खालीद की योजना थी। उसने कभी हार न खाई थी। न कभी वह युद्ध-भूमि से पीछे ही हटा था। इस बार भी वह पीछे हटानेवाला न था।

* * *

मान्यूल के शिविर में भी कल होनेवाले युद्ध के बारे में भय था। किसी के मुख पर उत्साह न था। आशा न थी। उस शिविर में जितने सैनिक थे, वे सब मैदान में देखे गये। युद्ध में खड़े होकर मुकाबला करना जितना मुश्किल था, उतना ही भागना।

सेनापतियों में भी यों बातचीत हुई—"हमारे पास रसद पहुँचने के लिए कम से कम तीन दिन लगेंगे। हमें बिल्कुल
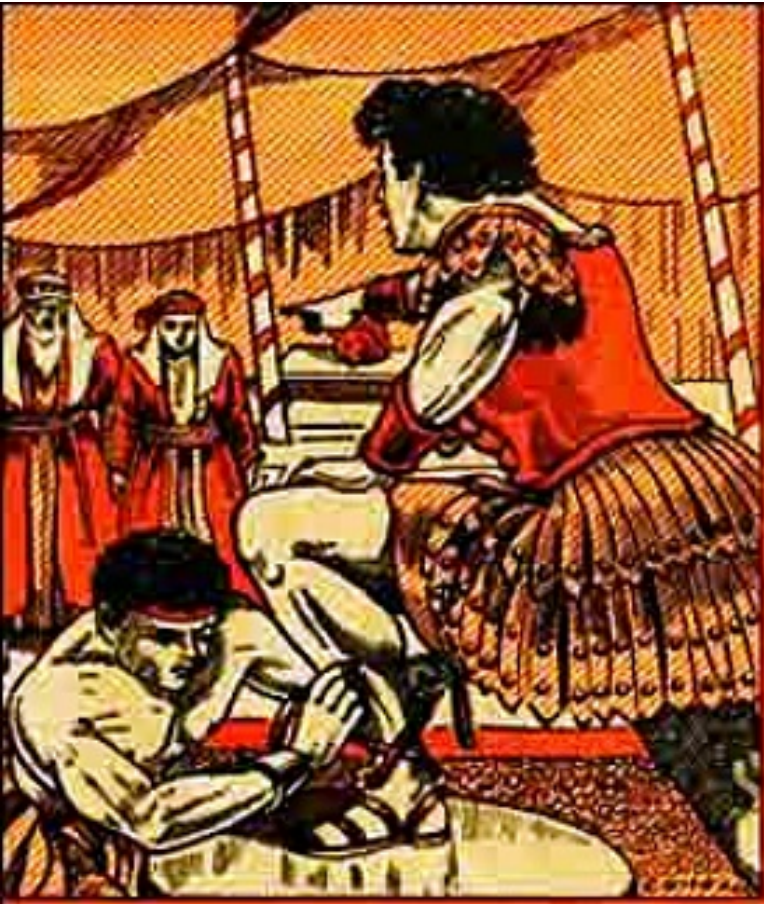
आशा नहीं है कि कल हमारे सैनिक मैदान में लड़ेंगे।"

"अगर हमने शत्रु को यह विश्वास दिलाया कि हज़ारों में मुसलमान हमारी सेना में मिल रहे हैं, तो उनके पैर उखड़ जायेंगे।" एक अधिकारी ने कहा।

तुरत मान्यूल ने अपने सैनिकों से कहा—"उस भेदिये को यहाँ लाओ। युद्ध के कैदियों से कह दो कि जो हमारे साथ लड़ेंगे उनको रिहा कर दिया जायेगा। अगर किसी ने ऐसा न किया तो उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये जायेंगे।"

कनाना को मान्यूल के सामने लाया गया। दो दिन से न उसने कुछ खाया था, न पिया था, वह बहुत कमज़ोर नज़र आता था।

"मैं तुम्हें कटवाने जा रहा हूँ। अगर कुछ कहना है, तो अभी कह लो।" मान्यूल ने कनाना से कहा।

"हुज़ूर, युद्ध के कैदियों में एक बूढ़े को देखा है चाहे तो आप मुझे दुगना सतायें पर उस बूढ़े को छोड़ दीजिये।" कनाना ने कहा।

"कौन है वह बूढ़ा।" मान्यूल ने पूछ.।

"सफ़ेद लम्बी दाढ़ीवाला। उस तरह का कैदी कोई दूसरा नहीं है।" कनाना ने कहा।

"तुम्हारा उसके साथ क्या सम्बन्ध है?" मान्यूल ने पूछा।

"वे मेरे पिता हैं।" कनाना ने कहा।

मान्यूल ने बूढ़े कैदी को बुलवाया। "क्या यही तेरा पिता है?" उसने पूछा। कनाना ने सिर हिलाकर कहा—"हाँ!"

मान्यूल ने कनाना से कहा—"हमें तुम्हारे कारण बहुत मुसीबतें उठानी पड़ीं।

तुम्हारी जानकारी देने के कारण, खालीद जबाबुल को पूरी तरह हरा सका। अगर तुमने हमारे भेद खालीद के पास न पहुँचा दिये होते तो हम अब तक मक्का मदीना पहुँच गए होते। तुमने हमें बहुत धोखा दिया है। हमें बहुत हानि पहुँचाई है। परन्तु तुम वीर हो, तुम्हारी जितनी बहादुरी मुझे खालीद में भी न दिखाई दी। इसलिए मैं तुम्हारे और तुम्हारे पिता के प्राण बचाऊँगा। पर तुम्हें जो मैं कहूँगा वह करना होगा। सूर्य के उदय होने के समय इस पहाड़ के किनारे खड़े होकर एक भाले को घुमाते हुए जोर से अपने पिता और अपना नाम लेकर कहो। "एक और घंटे में तीस हज़ार अरब ग्रीक सेना के साथ युद्ध में आ रहे हैं। फिर इस भाले से एक अरब को मारो। अगर तुमने यह किया तो मैं तुम्हें और तुम्हारे पिता को छोड़ दूँगा। तुम्हें अच्छी जागीर दूँगा। अगर तुमने, जो मैंने कहा है, नहीं किया, तुम्हें और तुम्हारे पिता को मरवा डालूँगा।"

जबतक यह सुनता रहा तबतक कनाना का पिता अपने लड़के के बारे में सन्देह करता रहा। अब उसने लड़के को देखकर

कहा—"बेटा, कनाना! मैं तुम्हारे बारे में जाने क्या क्या सन्देह कर रहा था। परन्तु मुझ बूढ़े को बचाने के लिए तुम अपनी जाति को धोखा न दो। तुमने कभी भी भाला हाथ में नहीं लिया है। इस नीच की बात सुनकर कभी यह काम न करना।"

कनाना ने पिता की बात अनसुनी कर दी। उसने मान्यूल को देखकर कहा—"क्या सूर्योदय तक मुझे समय दे सकोगे? मुझे तबतक सोचना है।" मान्यूल इसके लिए मान गया। उसने अपने सैनिकों से

कहा—"इसे पहाड़ी पर ले जाकर, अकेला बैठ कर सोचने दो।"

कनाना जाकर पहाड़ पर बैठ गया। उसने ध्यान से घाटी में देखा। उस घने अन्धेरे में उसे पता लगा कि अरब पीछे हट रहे थे। दूर डेरों का उखाड़ना और ऊँटों का दक्षिण की ओर जाना उसने देखा। इस तरह अरबों का पीछे हटना अरेबिया के लिए आत्महत्या की तरह था।

उसने अपनी कमीज़ में छुपाये हुए पेटी में से एक और टुकड़ा निकाल कर उस पर अपने खून से लिखा—"भागो मत। शत्रुओं की हालत बुरी है। उन पर पीछे से हमला करो।" लिख कर उसे कमीज़ में रखकर बैठ गया। सूर्योदय के समय एक सैनिक ने उसका कन्धा थपथपा कर कहा—"सूर्य उदय होनेवाला है।"

कनाना ने मान्यूल के डेरे में प्रवेश करके कहा—"भाला दीजिये!" उसको एक भाला दिया गया। उसने उसे नीचे फेंक कर कहा—"क्या इससे भारी नहीं है! भारी भाले को लेकर पहाड़ के किनारे किनारे आते, पेटी के टुकड़े को कमीज़ से निकाल कर भाले पर लपेटा।

उसके पीछे कुछ दूरी पर मान्यूल ने खड़े होकर कहा—"डरो मत, जो मैंने कहा है अगर न किया तो तुम्हारे पिता की आँखें निकलवा दूँगा।"

कनाना ने मुड़कर न देखा। "वह देखो, जो वहाँ घूम रहा है, खालीद है। क्या आप तबतक ठहर सकते हैं, जबतक उसका घोड़ा मेरे भाले की पहुँच तक आता है!"

"अरे वाह! अच्छे बहादुर लड़के हो।" मान्यूल ने कहा—"अगर तुमने खालीद को मार दिया, तो तुम्हें सोने से तुलवाऊँगा।"

जल्दी ही खालीद ने कनाना को पहाड़ी पर देखा। उसने और सैनिकों को पीछे छोड़ दिया। और अपने घोड़े को पहाड़ के पास ले गया।

"यही मौका है....हूँ....।" मान्यूल ने कहा। कनाना भाले को धीमे से ऊपर उठाकर चिल्लाया "मेरा पिता "मरुभूमि भयंकर" है। मेरा नाम कनाना है।" पीछे खड़े सब सैनिकों ने उसकी ओर देखा।

"एक और घंटे में तीस हजार अरबों के साथ ग्रीक लड़ने जा रहे हैं।" कनाना ने कहा। फिर उसने पूरे जोर से भाले को

खालीद की ओर फेंका। जब तक वह बातें करता रहा खालीद हिला तक नहीं।

भाला ठीक निशाने पर ही लगा। वह आकर खालीद के घोड़े के माथे पर जाकर लगा। घोड़ा वहीं मर गया। खालीद घोड़े से उतर कर भाले को घोड़े के माथे से निकाल कर उसे लेकर सैनिकों की तरफ़ चला गया।

इस बीच नीचे खड़े अरब चिल्लाने लगे—"धोखेबाज़, गद्दार, कायर।" वे कनाना को गालियाँ देने लगे।

मान्यूल बहुत खुश हुआ। थोड़ी देर में, यह पता लगा कि मैदान में केवल कुछ अरब पदाति ही रह गए थे। बाकी सब चल गए थे।

"जो सैनिक लड़ सके उनको मैदान में भेजो। ज़रूर हमारी जीत होगी।" मान्यूल ने कहा।

चौथे दिन युद्ध शुरु हुआ। पर उसे युद्ध नहीं कहा जा सकता था। बदावियों ने आगे बढ़ने में कोई उत्साह न दिखाया। और उनको पीछे भगाने की शक्ति मान्यूल के सैनिकों में न थी।

एक घंटा हो गया यकायक मान्यूल के सैनिकों के पिछले भाग में कोलाहल हुआ। दस हज़ार अरब घुड़सवार, बीस हज़ार ऊँट सवारों ने आकर पीछे से हमला किया।

मान्यूल और उसके सैनिकों को नाश करने में ठीक एक घंटा लगा।

कनाना ने एक ही एक बार भाला पकड़ा था, वह भी अरेबिया के लिए, अलाह के लिए। अरेबिया को जिस अहिंसा के योद्धा ने अकेला बचाया था, उसके भाले की पूजा अब भी अरबवासी करते हैं।

[समाप्त]

क्या जानते हो ?

★ किसी जमाने में, रोम में स्त्रियाँ रथ चलाया करती थीं। परन्तु क्रायस्ट के जन्म के २०५ वर्ष पहिले, इसको कानून द्वारा बन्द कर दिया गया। फिर २५ वर्ष बाद यह कानून रद्द कर दिया गया।

★ सोलहवीं, सत्रहवीं सदी में, हन्गरी और पोलेन्ड में, तीस तोलों के सोने के सिक्के न थे।

★ नौकरी करनेवाले आदमियों से घर मे काम करनेवाली स्त्रियाँ अधिक काम करती हैं।

★ सहारा रेगिस्तान सारा का सारा रेत नहीं है। उसका बहुत-सा भाग पथरीला है।

★ सूर्य के चारों ओर घूमनेवाले नौ ग्रहों के सिवाय, करीब १६००, छोटे ग्रह भी इसकी परिक्रमा करते हैं।

★ पाल्तू कुत्तों की अपेक्षा पाल्तू बिल्लियाँ अधिक दिन जीवित रहती हैं। कुत्ते बीस वर्ष से अधिक नहीं जाते, पर बिल्लियाँ तीस वर्ष से अधिक जीती हैं।

★ सोवियत रूस में, पेट्रोल्यिम समुद्र की तह से निकाला जा रहा है। यह भूमि से निकाले जानेवाले पेट्रोल्यिम से ढाई गुना सस्ता है।

★ आज, जो 'पंचतंत्र' आप 'चन्दामामा' में पढ़ रहे हैं वह बहुत समय पहिले रुसी में अनूदित हो गया था। असली बेताल कहानियाँ भी रूसी में अनूदित हो चुकी हैं। कल्पित नहीं।

कठिनाइयाँ

हम जब कभी किसी नये प्रदेश में जाते हैं—तो वहाँ के वातावरण, आचार-व्यवहार के बारे में पहिले मालूम करते हैं। जो ठंडी जगह जा रहे होते हैं वे ऊनी कपड़े ले जाते हैं। इसलिये जो चन्द्रमा तक जाना चाहते हों, उनके लिए जरूरी है, कि वे चन्द्रमा के बारे में सब कुछ जानें।

चन्द्रमा, भूमि का उपग्रह है। यानि भूमि के चारों ओर घूमता, सूर्य की परिक्रमा करता भूमि के पीछे पीछे चलता है।....उसको भूमि की परिक्रमा करने के लिए $27\frac{1}{3}$ दिन लगते हैं। भूमि अगर सूर्य के चारों ओर न घूमकर एक जगह खड़ी रहे—एक पक्ष की पूर्णिमा और दूसरे पक्ष की पूर्णिमा के मध्य, $27\frac{1}{3}$ रोज ही होंगे। चूंकि भूमि भी घूम रही है, इसलिये दो पूर्णिमाओं के बीच $29\frac{1}{2}$ रोज होते हैं।

हम जानते ही हैं, भूमि 21 घंटों में एक बार आत्म प्रदक्षिणा के लिये एक महीना लगता है। इसी कारण हम चन्द्रमा का आधा भाग ही देख पाते हैं। चन्द्रमा के उपरले भाग का $4\frac{1}{2}$ प्रतिशत हिस्सा भूमि की ओर कभी नहीं मुड़ता। मतलब यह हुआ कि चन्द्रमा में, 15 दिन, 15 दिन रात्री रहती है। यानि वह भाग जहाँ दिन होता है, सूर्य की गरमी के कारण पन्द्रह दिन तपता है। और वह भाग, जो रात में होता है। 15 दिन सरदी के कारण ठिठुरता है।

हमारी भूमि के चारों सैकड़ों मीलों की वायु की तह है, और वह सूर्य की

चन्द्रमा में उदय, पूर्वान्ह, मध्यान्ह अपरान्ह, अस्त—दो सप्ताह।

गरमी की तेजी को कम करती है। चन्द्रमा में ऐसी कोई परत नहीं दिखाई देती। अगर हो भी तो वह बहुत छोटी होगी। इसलिये भूमि की अपेक्षा, चन्द्रमा पर सूर्य की गरमी बहुत अधिक होगी। यह वायु की परत हमारी रक्षा केवल सूर्य की कान्ति से ही नहीं करती, अपितु कॉस्मिक किरणें, और उल्काओं से भी करती है। उल्कायें बहुत तेजी से, वायु की परत में प्रवेश करती हैं और इसको छूकर, कई सौ मील ऊपर ही भस्म हो जाती हैं। अध जली, उल्कायें, अक्सर भूमि पर नहीं गिरतीं। पर चन्द्रमा में ऐसा नहीं होता। प्रति उल्का, जो चन्द्रमा से आकर्षित होगी, भयंकर वेग से आकर चन्द्रमा से टकरायेगी।

भूमि के चारों ओर की परत, सूर्य की किरणों को बिखेर देती है। इसलिए, हमें आकाश नीला प्रकाश देता लगता है। इस प्रकाश के कारण ही, हम घर में रहकर भी सब वस्तुओं को देख पा रहे हैं। क्योंकि चन्द्रमा में वायु की परत नहीं है, इसलिए यदि वहाँ से आकाश देखा गया तो वह निरा काला दिखाई देगा। आकाश में यदि एक तरफ सूर्य चमक रहा होगा, तो दूसरी तरह और नक्षत्र चमक रहे होंगे। यद्यपि एक तरफ सूर्य चमक रहा होगा, पर वहाँ पहाड़ों की साया में कुछ न दिखाई देगा। वहाँ देखने के लिए वहाँ "आकाश का प्रकाश" नहीं होता।

वायु की परत के कारण भूमि के प्राणी, वायु के दबाव के शिकार हैं।
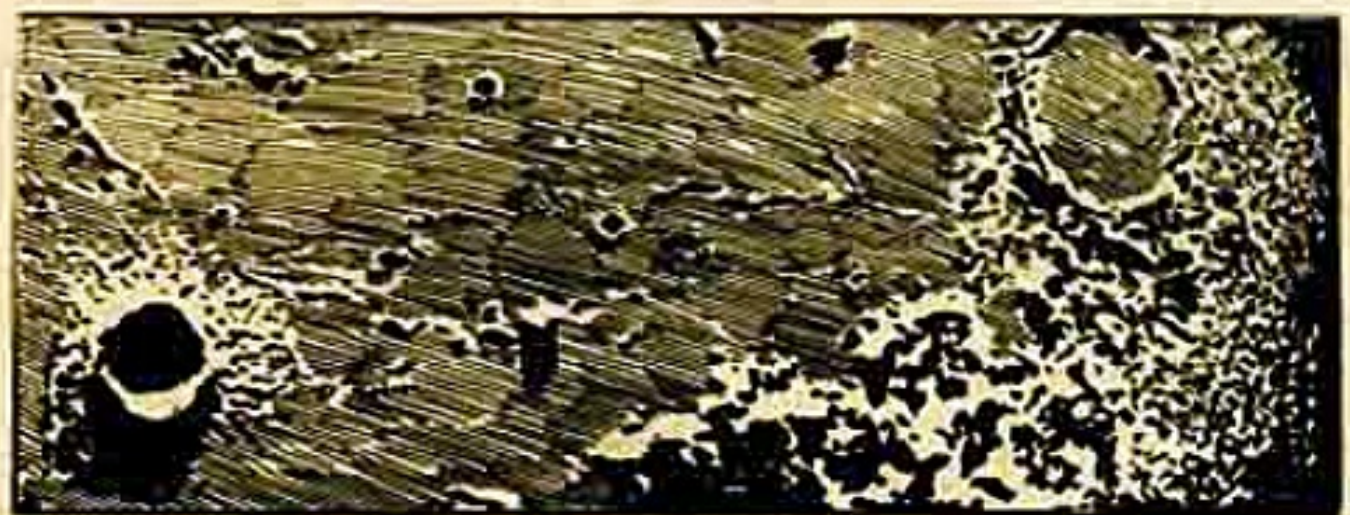
चन्द्रमा में जमीन इस तरह की है।

अगर अचानक यह वायु की परत गायब हो जाये तो, हम श्वास न ले सकेंगे और मरने से पहिले हमारे शरीर का रक्त व अन्य चीज़ें गरम होने लगेंगी, और बाम्ब की तरह फूट पड़ेंगी। यह खतरा उन्हें भी हो सकता है, जो वायु में से चन्द्रमा की ओर जायेंगे। परन्तु यह खतरा, भूमि को छोड़ते ही शुरु हो जायेगा। चन्द्रमा में पहुँचने पर नये सिरे से न होगा।

वायु के बाद, जीवन के लिए सब से अधिक आवश्यक जल है। चन्द्रमा में लगता है, कहीं पानी नहीं है। आकाश से, व अन्य ग्रहों से, अथवा चन्द्रमा से ही यदि भूमि को देखा जाय तो उसके चारों ओर मेघ दिखाई देते हैं। परन्तु चन्द्रमण्डल में कहीं कोई मेघ नहीं दिखाई देता। चन्द्रमा के यात्रियों को, अपने साथ जरूरी हवा, व जल को भी ले जाना होगा। यदि हम भूमि पर जी रहे हैं, तो दूसरे प्राणियों को (शाकाहार हो, या मांसाहार) खाने के कारण ही। परन्तु चन्द्रमा में कोई प्राणी भी नहीं दिखाई देता। चन्द्रमा में पहिला पहल कदम रखनेवाला, प्राणी मनुष्य ही होगा।

यही नहीं, यह भी सम्भव है, कि चन्द्रमा के उपरले भाग में ज्वालामुखी भी हो।

यद्यपि चन्द्रमा तक पहुँचने के लिये, इतनी सारी कठिनाइयाँ हैं, फिर भी मनुष्य वहाँ पहुँचने की कोशिश कर कर रहा है और उसका विश्वास है कि वहाँ पहुँचकर रहेगा।

भूमि से चन्द्रमा में पहुँचे आकाश-यात्री।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

जुलाई १९५९ :: पारितोषिक १०)
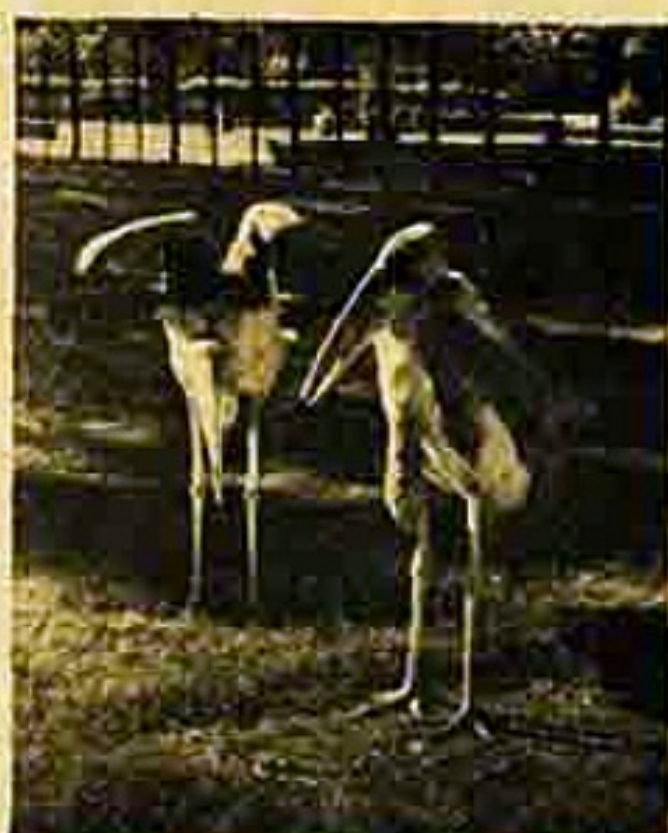
कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिये। परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिख कर निम्नलिखित पते पर ता. ५, मई '५९ के अन्दर भेजनी चाहिये।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन
वडपलनी :: मद्रास - २६

मई – प्रतियोगिता – फल

मई के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं। इनके प्रेषक को १० रु. का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : विजय के बाद,
दूसरा फ़ोटो : पूर्वजों की याद!
प्रेषक : जगतार सिंह दुग्गल,
६, म्युनिस्पिल रोड, देहरादून,

चित्र - कथा

एक दिन दास और वास गेंद से खेल रहे थे कि वह एक पेड़ के नीचे जा गिरी। उस पेड़ से एक बैल बँधा था। उसने उनको गेंद के पास न आने दिया। वह उन्हें मारने दौड़ा। "टाइगर" ने जाकर उसको पीछे से छेड़ा। वह "टाइगर" के पीछे दौड़ा। "टाइगर" पेड़ के चारों ओर दौड़ने लगा। जब बैल उसके पीछे भागा, तो उसके गले की रस्सी तने से लिपट गई। उस समय "टाइगर" मुख में गेंद रखकर, दास और वास के पास आ गया।

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Private Ltd., and Published by B. VENUGOPAL REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3 Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

Photo by J. C. Mehta

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

पूर्वजों की याद !!

प्रेषक :
जगतारसिंह दुग्गल, देहरादून

CHANDAMAMA (Hindi) MAY 1959 Regd. No. M. 5452

बुद्ध चरित्र